एकता के लिये संघर्ष - संघर्ष के लिये एकता

बी टी रणदिवे

सीटू, मध्य प्रदेश प्रकाशन

●एकता के लिये संघर्ष - संघर्ष के लिये एकता

●बी टी रणदिवे

साथ में

●जनवादी कार्य पद्धति

(सीटू के नौवें राष्ट्रीय सम्मेलन,
20-26 अप्रैल 1997 द्वारा स्वीकृत दस्तावेज)

भूमिका

चित्तबृत मजुमदार

सीटू, मध्य प्रदेश प्रकाशन
13-बी, पद्मनाभ नगर, भोपाल (मध्य प्रदेश)
फोन: 2757751, फैक्स: 2759532

प्रकाशन वर्ष: नवंबर 2004

प्रकाशक:

सीटू मध्य प्रदेश प्रकाशन
13-बी, पद्मनाभ नगर,
न्यू सुभाष कालोनी, भोपाल।
फोन:- 2757751, पैक्स: 2759532

मुद्रक:

दृष्टि ऑफसेट,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल।

मूल्य: पांच रुपए

सेंटर ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियन्स, मध्य प्रदेश राज्य समिति की ओर से **बादल सरोज,** 13-बी, पद्मनाभ नगर, न्यू सुभाष कालोनी भोपाल द्वारा प्रकाशित।

भूमिका

कामरेड बी टी रणदिवे जन्म शताब्दी प्रकाशनों के क्रम में, ''बी टी रणदिवे: जीवन तथा शिक्षायें'' के प्रकाशन के बाद हमने तय किया था कि बी टी आर की शिक्षाओं के बारे में कई एक पुस्तिकाएं छापी जायें तथा उनमें, जहां तक संभव हो, खुद बी टी आर के शब्दों में उनकी शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत किया जाये। मौजूदा पुस्तिका, जिसमें 1970 में हुए सी आई टी यू के स्थापना सम्मेलन में बी टी आर द्वारा दिये गये मशहूर समापन भाषण को पूरा छापा गया है, इस श्रृंखला की पहली पुस्तिका है।

सी आई टी यू का उदय ट्रेड यूनियन आंदोलन में तत्कालीन सुधारवादी एवं संशोधनवादी दृष्टिकोण तथा उस वक्त के हावी नेतृत्व की वर्ग सहयोगवादी नीति व आचरण के विरुद्ध तीखे संघर्ष के निष्कर्ष में हुआ था। किंतु सी आई टी यू की स्थापना का मतलब इस संघर्ष का अंत नहीं है। ना ही ऐसी उम्मीद ही की गई थी। सी आई टी यू के, वर्ग संघर्ष के प्रति प्रतिबद्ध मजदूरों की लामबंदी के केंद्र के रूप में सामने आते ही उस उक्त के हावी नेतृत्व की वर्ग सहयोगवादी नीतियों व आचरण तथा सुधारवादी-संशोधनवादी दृष्टिकोण के विरुद्ध संघर्ष ने एक नये चरण में प्रवेश कर लिया था। सी आई टी यू के स्थापना सम्मेलन में कामरेड बी टी आर के समापन भाषण का प्राथमिक उद्देश्य सीटू के नेताओं व कार्यकर्ताओं को ऐसे ठोस दिशानिर्देश देने का था जिन पर चलकर वे संघर्ष को आगे बढ़ा सकें तथा वैसे ही गलत रुझानों का शिकार बनने से बच सकें।

इसीलिए, अपने भाषण की शुरुआत करते हुए ही कामरेड बी टी आर ने चेतावनी दी थी कि हावी नेतृत्व की भटकावे वाली नीतियों व व्यवहार के विरुद्ध लड़ाई की गर्मी में, इस नवजात संगठन को यह नहीं भूलना चाहिए कि ''हम कुछ अधिक गंभीर और मजदूर वर्ग के अस्तित्व मात्र के लिये बेहद ज्वलंत चिंता की वजह से यहां एकत्र हुए हैं, और वह है अपने मुख्य शत्रु के खिलाफ वर्ग संघर्ष। ... हमारे साथियों को यह याद रखना चाहिए कि आज हम भारत में अपने मुख्य वर्ग शत्रुओं- इजारेदार पूंजीपतियों, बड़े पूंजीपतियों तथा उनकी संरक्षक सरकार- से जीवन मरण की मुठभेड़ में गुंथे हुए हैं। वर्ग सहयोग व समर्पणवादी नीतियों व आचरण के विरुद्ध संघर्ष इसलिए जरूरी था क्योंकि वे हमारे मुख्य वर्ग शत्रु के खिलाफ संघर्ष तथा मजदूर वर्ग की एकता के रास्ते में बाधायें उत्पन्न कर रहे थे।''

तब से परिस्थितियों में काफी बदलाव आया है। कुछ बड़ी ट्रेड यूनियनों का एक

व्यापक आधार वाला संयुक्त मोर्चा कायमं हुआ है और मजदूर वर्ग पर बढ़ते हमलों के खिलाफ एक संयुक्त संघर्ष, भले कुछ सीमित ही सही, विकसित हुआ है। जनसंगठन मंच का अस्तित्व भी इसी संघर्ष का परिणाम है। इस भाषण में कई आलोचनात्मक टिप्पणियां उस वक्त विद्यमान स्थिति के संदर्भ में की गई थीं और अब उन्हें उसी संदर्भ में देखा जाना चाहिए। लेकिन यह भाषण पूर्ण समग्रता लिये हुए है। दिशा निर्देश व आलोचनात्मक टिप्पणियां एक दूसरे में इस कदर गुंथी हुई हैं कि इन आलोचनात्मक टिप्पणियों को हटाना भाषण की भावना से हटे बिना संभव नहीं है। इसलिए हम बिना संपादित किये, पूरे भाषण को ही प्रस्तुत कर रहे हैं। हमें भरोसा है कि हमारे पाठक यह देख सकेंगे कि कौन सी टिप्पणी अब किसके लिये लागू नहीं होती।

यह भी याद रखना होगा कि जब तक पूंजीवाद कायम है तब तक ट्रेड यूनियन आंदोलन में सुधारवादी और संशोधनवादी तथा संकीर्णतावादी रुझान भी जारी रहेंगे। उनके विरुद्ध संघर्ष को भी जारी रखना होगा। देश में बदली हुई परिस्थितियों के बावजूद कामरेड बी टी आर का यह भाषण संघर्ष को जारी रखने के लिए एक ताकतवर हथियार उपलब्ध कराता है।

बी टी आर शताब्दी समारोह के हिस्से के रूप में इस भाषण को हिंदी में प्रकाशित करके सी आई टी यू की मध्य प्रदेश राज्य समिति ने एक प्रशंसनीय पहल की है। मुझे भरोसा है कि यह प्रकाशन हमारे साथियों व कार्यकर्ताओं के लिये बेहद उपयोगी साबित होगा।

चित्तबृत मजुमदार
महासचिव
सेंटर ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियन्स (सीटू)

बी टी रणदिवे भवन,
13 ए राउज एवैन्यू,
नई दिल्ली 110002

एकता के लिये संघर्ष - संघर्ष के लिये एकता

(सी आई टी यू के स्थापना सम्मेलन, कलकत्ता में 30 मई 1970 को दिया गया बी टी रणदिवे का समापन भाषण)

साथियो,

इस ऐतिहासिक सम्मेलन के लिये की गई हम सबकी मेहनत अब अपने अंत की ओर है। इसमें भाग लेने आये आप सभी साथी भारत की विभिन्न यूनियनों व ट्रेड यूनियन केन्द्रों की नुमाइंदगी कर रहे हैं। आप उस बंगाल से आये हैं जिसमें हाल ही के इतिहास में मजदूर वर्ग ने बड़ी लड़ाइयां लड़ी हैं और खुद आपने देखा है कि जिस नये केन्द्रीय ट्रेड यूनियन संगठन की हमने स्थापना की है वह लाखों मजदूरों पर अपना असर रखता है, उनका सम्मान हासिल कर चुका है। ये वे मजदूर हैं जिन्होंने अपने ट्रेड यूनियन संघर्षों में लाठियां खाई हैं, पुलिस की गोलियों का सामना किया है।

यह सम्मेलन और यह नया संगठन दो नेताओं के बीच लड़ाई की वजह से या दो गुटों के बीच गुटबाजाना झगड़े की वजह से अस्तित्व में नहीं आया। यह लाखों मजदूरों की भागीदारी वाली सबसे व्यापक हड़तालों के ज्वार से उभर कर आया है। ये वे लाखों मजदूर हैं जिन्होंने हाल के इन संघर्षों में हिस्सा लिया, दमन और उत्पीड़न भुगता और अपनी लड़ाइयों की कामयाबी व जीत पर खुशी और प्रसन्नता को महसूस किया। किसी इस या उस नेता ने नहीं, इन्हीं लाखों मजदूरों और उनके नेताओं ने इस नये संगठन की स्थापना की है। मैं आपको यह सब इसलिए याद रखने के लिए कह रहा हूं, क्योंकि हो सकता है कि कुछ वर्षों बाद डांगे जैसे कुछ सुधारवादी यह लिखें या कहें कि इस या उस नेता ने एटक का विभाजन कराया था।

हम जिस नये संगठन की शुरूआत कर रहे हैं वह मजदूर संघर्षों की सख्त जरूरतों और उस वर्ग संघर्ष का परिणाम है, जिसके प्रति हम संकल्पबद्ध हैं।

आप सभी ने गोवा कन्वेंशन के उस प्रस्ताव को मंजूर किया है जिसने कहा था कि मजदूर वर्ग की एकता, वर्ग संघर्ष और मजदूर वर्ग के दैनंदिन हितों की रक्षा के संघर्षों को चलाना अब डांगे के प्रभुत्ववाली एटक में काम करते हुए संभव नहीं है। नया संगठन बनाने के शौक की वजह से इसका निर्माण नहीं किया जा रहा है। मजदूर

वर्ग की एकता को आगे बढ़ाने के लिये यह जरूरी था कि अब पहलकदमी को एटक के सुधारवादी ग्रुप-डांगे ग्रुप- के आगे समर्पित करने की बजाय इसे खुद मजदूरों व जुझारू यूनियनों द्वारा अपने हाथ में लिया जाये। इसी के चलते नया संगठन बनाने की जरूरत सामने आई।

कामरेड पी राममूर्ति द्वारा रखी गई रिपोर्ट पर बहस के दौरान आप में से बोले हरेक साथी ने न सिर्फ रिपोर्ट की ताईद की है बल्कि इस बात के और भी ज्यादा सबूत, खुद अपने स्वतंत्र सबूत, सामने रखे हैं कि एटक पर हावी नेतृत्व किस तरह मजदूर वर्ग के संघर्षों में फूट डालने या उन्हें दगा देने का काम कर रहा है। मजदूर एकता में फूट डालने की, उसे तोड़ने की हर जरूरी कोशिश कर रहा है। अब यह हम सभी का साझा अनुभव है। यही साझा अनुभव हम सबको एक साथ लाया है। मगर क्या यही सब कुछ है? क्या यह सम्मेलन डांगे एंड कंपनी पर चर्चा करने के लिये बुलाया गया था? क्या सैकड़ों मील की यात्रा करके हजारों की संख्या में हम यहां केवल एटक पर हावी नेतृत्व के बारे में अपनी राय की घोषणा करने के लिये इकट्ठा हुए थे? हम कुछ अधिक गंभीर और मजदूर वर्ग के अस्तित्व मात्र के लिये बेहद जीवंत चिंता की वजह से यहां एकत्र हुए हैं, और वह है अपने मुख्य शत्रु के खिलाफ वर्ग संघर्ष। चूंकि उस पर हावी नेतृत्व अब आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस को वर्ग संघर्ष के एक हथियार के रूप में काम नहीं करने दे रहा, चूंकि अब यह हमारे मुख्य शत्रु के खिलाफ लड़ाई में समूचे मेहनतकश वर्ग को लामबंद, संगठित और एकजुट नहीं कर सकता, इसलिए और सिर्फ इसीलिए हमने इससे नाता तोड़ा है, किसी निजी झगड़े की वजह से नहीं।

हमारे साथियों को यह याद रखना चाहिए कि आज हम भारत में अपने मुख्य वर्ग शत्रुओं-इजारेदार पूंजीपतियों, बड़े पूंजीपतियों तथा उनकी संरक्षक सरकार- से जीवन मरण की मुठभेड़ में गुंथे हुए हैं। कामरेड राममूर्ति ने अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों का संक्षिप्त जिक्र करते हुए बताया है कि अन्य देशों में क्या हो रहा है। अपने ट्रेड यूनियन आंदोलन को जारी रखते हुए, हमें उस काल को जरूर याद रखना चाहिए जिसमें कि हम जी रहे हैं। अगर हम अंतर्राष्ट्रीय घटनाविकास और दुनियां भर में चल रही ताकतवर लड़ाई को याद नहीं रखेंगे तो यह सम्मेलन आपको ज्यादा शिक्षित नहीं कर पायेगा। आपने कम्बोडिया पर एक प्रस्ताव मंजूर किया है। ऐसे में जब अमरीका की सैन्य प्रतिष्ठा वियतनाम में धूल चाट रही है तब कम्बोडिया जैसे देश पर हमला करने की हिम्मत उसमें कैसे आई? यह अमरीकी साम्राज्यवाद की शक्ति दर्शाती है या एक हताश दुस्साहवादी का जुआ है जो सभी दिशाओं से घिर चुका है और अपने अस्तित्व को बचाने के लिये अपनी जिंदगी को ही दांव पर लगा रहा है? यह वह अंतर्राष्ट्रीय स्थिति है जिसके बारे में अन्य वक्ताओं ने भी कुछ उल्लेख किया है। हम दुनियां भर के मजदूर, हम दुनियां भर के शोषित और मेहनतकश, हम दुनियां भर के

जनगण जीत की अपनी राह पर बढ़े चले जा रहे हैं। यह हमारा युग है, यह युग आम जनों और मजदूर वर्ग का युग है। चाहें जितनी मुश्किलें, परेशानियां और चुनौतियां आयें, चाहे जितने बम अमरीकी साम्राज्यवाद जिस किसी पर भी बरसाये, साम्राज्यवाद और पूंजीवाद के बारे में फैसला लिखा जा चुका है- कि तुम एक मृत समाज हो, निकट भविष्य में तुम्हारी मौत सुनिश्चित है। ये मजदूर वर्ग तुम्हें दफनाने वाला है।

समूचा समाजवादी विश्व, शक्तिशाली सोवियत संघ, अपनी उछाल भरती प्रगति के साथ आगे बढ़ता जनवादी चीन तथा वियतनामी जनता का अजेय संग्राम, दुनियां के मजदूर वर्ग की गर्व करने लायक उपलब्धियां हैं। समाजवाद और साम्राज्यवाद के बीच एक भीमकाय संघर्ष जारी हैं, हम भी इसी संघर्ष के हिस्से हैं।

यह वो दौर है जब पूरी दुनियां एक अशांति और खलबली में है। हम और हमारे सारे संघर्ष-भारत के दूरदराज के किसी भी कोने में, किसी भी फैक्ट्री में चलने वाले संघर्ष- इससे अछूते नहीं हैं। दुनियां की बड़ी घटनाओं के कुछ न कुछ असर में है। इसलिए आज हम पाते हैं कि हर संघर्ष पूरी दम लगाकर लड़ा जा रहा है। हम अगर वास्तव में मजदूर वर्ग के रोजमर्रा के हितों की रक्षा करना चाहते हैं तो हर ट्रेड यूनियन संघर्ष भी हमें सचेतन तरीके से संगठित कर पूरी दम से लड़ना पड़ेगा। एक तरफ हम पिछली दो वर्षों में ऐसे जबर्दस्त हमलों से गुजरे हैं, जिन्हें तीसरे चौथे दशक के मजदूरों की पीढ़ी ने तो जरूर देखा था किन्तु आज के श्रमिकों की पीढ़ी ने नहीं देखा था। ये जबर्दस्त हमले फैक्ट्रियों की बंदी से हजारों श्रमिकों पर थोपी गई बेरोजगारी, मजदूरों के कुचले जाने, उनका दमन किये जाने और उनकी हड़तालों के साढ़े चार महीनों तक चलने के रूप में सामने आये हैं। इससे पहले के समय में सुधारवाद ने पढ़ाया था कि हड़तालें, जैसे सत्याग्रह जैसी कुछ कार्यवाहियां होती हैं। आज हर हड़ताल संघर्ष एक गंभीर संघर्ष बन गया है। इसके बावजूद तमिलनाडु सहित कई राज्यों के कई संघर्षों में मजदूर वर्ग ने जीतें हासिल की हैं। पं. बंगाल की खास बात यह है कि पूंजीवाद के विश्वव्यापी संकट के बावजूद, मजदूर वर्ग की रक्षा में जीवंत भूमिका निबाहने वाली एक सरकार की मदद के चलते, वहां के मजदूर वर्ग ने न सिर्फ कामयाबियां हासिल कीं बल्कि पूंजीपति वर्ग की बाजी उलटते हुए जूट, चाय और टैक्सटाइल में शनदार जीतें हासिल की हैं। मगर बाकी देश में चूंकि संशोधनवादियों ने संघर्ष संगठित करना ही त्याग दिया, मजदूर वर्ग से दगा की, इसलिए कुल मिलाकर मजदूर वर्ग को जबर्दस्त हार का सामना करना पड़ा है। फैक्ट्रियों की बंदी और बेरोजगारी भुगतनी पड़ी है। खासी बड़ी मात्रा में संकट का बोझ मजदूरों पर डाल दिया गया है। हर रोज सरकार प्रचारित करती है कि कोई आर्थिक संकट नहीं है। अगले ही दिन वह कहती है कि कुछ पब्लिक सैक्टर की फैक्ट्रियों को बंद किया जाना चाहिए। बेरोजगारी बढ़ती जा रही है, हालात लगातार

बिगड़ते जा रहे हैं।

आर्थिक संकट हमारे दुश्मन की एकता को कमजोर कर रहा है। दस साल पहले, पांच साल पहले, चार साल पहले यही लोग हमारे खिलाफ एकजुट हो जाया करते थे। हमारे खिलाफ, मजदूर वर्ग और आम जनता के खिलाफ कांग्रेस एकजुट होकर खड़ी हो जाती थी। 1967 के आते तक कांग्रेस की एकता गायब हो गई। हमारे मजदूर नहीं जानते, आम जनता भी नहीं जानती कि ये उनके हाथ हैं जिन्होंने कांग्रेस की बुनियाद हिला कर रख दी है। ये उनके संघर्ष हैं जिन्होंने कांग्रेस की चूलें खिसका दी हैं और आज वह विभाजित पड़ी हुई है। कारखानों से अब आवाजें आनी लगी हैं कि हमारा दुश्मन कमजोर से और कमजोर हो रहा है, हमारे आंदोलन को दबाने की कोशिशें कर रहा है, मगर सत्तारूढ़ वर्ग की कमजोरी बढ़ती जा रही है, ठीक इसी वक्त कोई और भी है जो हम पर हमले बोल रहा है। सुधारवादी और संशोधनवादी हमारे बीच फूट डाल रहे हैं। सरकार, पूंजीपतियों तथा फूटपरस्त सुधारवादियों और संशोधनवादियों ने एक साथ हमारे ऊपर आक्रमण किया हुआ है।

इस संदर्भ को ध्यान में रखते हुए हमें समझना होगा कि संगठन पर हमारे कार्यभार क्या हैं। आर्थिक संकट सघन हो रहा है, राजनीतिक संकट गहरा हो रहा है। इस संकट के गहरे होने का मतलब अब सिर्फ पुलिस, जेल, लाठीचार्ज और पुलिस गोली कांडों में शहादत ही नहीं है। यह कलकत्ता की सड़कों और गलियों में गुंडों द्वारा छुरे भौंक देने तक आ गया है। यह पं. बंगाल में सामने आ रहे वर्ग संघर्ष का रूप है। पुलिस का सामना करना एक बात है। मगर आप दिन भर के ट्रेड यूनियन काम के बाद घर वापस लौटते हैं, अपनी गली में घुसते हैं कि आप के पीछे से पूंजीपतियों या आपके ही पुराने संयुक्त मोर्चे के सहयोगियों का कोई गुंडा हमला कर देता है। ठीक ऐसा ही केरल में हो रहा है। जब हम कहते हैं कि वर्ग संघर्ष गहरा हो रहा है तब हमें समझना चाहिए कि इन दो राज्यों में, विशेषकर पं. बंगाल में, ट्रेड यूनियन संघर्षों, यहां तक कि साधारण संघर्षों में, हर संघर्ष में कोई न कोई हत्या, छुरेबाजी, खून बहाने की वारदातें हो रही हैं। लगता है रक्तहीन संघर्ष अब नहीं बचे हैं। हमारे दुश्मन हम पर लगातार हमले करने में जुटे हैं।

हम पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं कि हमने इस नये संगठन की शुरूआत क्यों की। खासतौर से इसलिए कि इस दौर में मजदूर वर्ग के रोजमर्रा के हितों की हिफाजत वही संगठन कर सकता है जो मजदूर वर्ग की एकता के प्रति समर्पित हो, उसके साझे प्रतिरोध की अगुआई करने के प्रति संकल्पित हो। बाकी सब सिर्फ ज्ञापन सौंपेंगे और बाद में दगा कर देंगे। डांगे गुट के प्रभुत्व को स्वीकारने का मतलब एकता की साझी लड़ाई की पहल का उनके हाथ में समर्पण कर देना होगा, जो पहले से ही उसमें फूट डालने में जुटे हैं। मगर जो हमने देखा है वह केवल ट्रेड यूनियनों

का विघटन और फूटपरस्ती नहीं है। यह केवल ट्रेड यूनियनों की जनवादी कार्यप्रणाली का न होना ही नहीं है। पिछले 3-4 वर्षों में कुछ और भी ज्यादा गहरा घटा है- और यह कुछ क्या है, इसे एटक के नेतृत्व में बैठे लोगों की राजनीतिक कलाबाजी (पूरी तरह काया पलट) में देखा जा सकता है। पिछले चार वर्षों में कदम दर कदम करते हुए उन्होंने अपनी गद्दारी पूरी की है। पं. बंगाल और केरल में कांग्रेस पार्टी व उसकी नीतियों के खिलाफ मजदूर वर्ग व अन्य ताकतों से हाथ मिलाकर संयुक्त मोर्चा बनाने के बजाय ये लोग दूसरी ओर चले गये। पं. बंगाल में संयुक्त मोर्चा तोड़ डाला, केरल में संयुक्त मोर्चा तोड़ कर एक ऐसी सरकार बना ली जो मजदूरों पर दमन कर रही है। किसानों को कुचल रही है। एटक पर हावी पार्टी के राजनीतिक रूप से ढह जाने का असर उनकी ट्रेड यूनियन नीति पर भी पड़ा है। ट्रेड यूनियन फूटपरस्ती की उनकी लाइन उस राजनीतिक लाइन में से निकली है जो उन्हें इंदिरा कांग्रेस के साथ गहरे से गहरे होते सहयोग तक ले गई है। हमने जनवादी कार्यप्रणाली की मांग की, हमने उनकी वर्ग सहयोगवादी नीतियों की आलोचना की; उन्होंने सरकार और कांग्रेस से खुलेआम हाथ मिला लिये। यहां तक कि वे हड़ताल विरोधी प्रस्तावों और कानूनों तक का समर्थन कर रहे हैं। आज के इस संकटकालीन समय में एक ऐसे संगठन का होना कितना खतरनाक होगा जिससे अपेक्षा तो लाखों मजदूरों व उनके संघर्षों की अगुआई की हो, मगर जिसके नेता दगाबाजी कर उन्हें दुश्मन के हाथों में सौंप दें।

इसमें कोई शक नहीं कि हमारे साथियों के भाषणों में काफी उत्साह दिखा है, कुछ साथियों ने आकर कहा है कि अलग होने का यह काम हमें तीन वर्ष पहले ही कर लेना चाहिए था। मगर अपने संगठन को मजदूर वर्ग की एकता का अभेद्य दुर्ग बनाने के लिये सिर्फ उत्साह के अलावा भी कुछ चाहिए। क्या हमने अपने सारे गलत विचार त्याग दिये हैं? अगर आप संशोधनवादियों के साथ '*होली*' खेलेंगे तो आपके कपड़ों और शरीर पर सुधारवाद का रंग लगना निश्चित है। इन दिनों कमोबेश आप सभी संशोधनवादियों के साथ '*होली*' खेल रहे थे। हमारी आलोचना भी कुछ '*गुलाल*' फैंकने जैसी थी, और कुछ नहीं। अब हमें खुद अपने को, अपने ही सम्मुख उजागर करना है। 1966 में एटक के बंबई अधिवेशन में हमारे कहने पर एक एकता प्रस्ताव मंजूर किया गया था। मैं यह नहीं पूछूंगा कि आप में से कितनों ने उस प्रस्ताव को अमल में लाने की कोशिश की। उस प्रस्ताव में हमने सहमति बनाई थी कि एटक के अंदर मजदूर वर्ग की एकता बनाने के लिये हम इजारेदार पूंजीपतियों और अमरीकी साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष जारी रखेंगे। उस प्रस्ताव में जनवादी चीन के साथ मित्रतापूर्ण संबंधों की बात भी जुड़ी है। हमारे दबाव के चलते वे उसके एक भी मुद्दे का विरोध नहीं कर पाये। मगर हुआ क्या? हमने इसे अमल में लाने के लिए ज्यादा कुछ नहीं किया और सारी पहल संशोधनवादियों के हाथों में छोड़ दी।

हम उन पर अर्थवाद का आरोप लगाते हैं। हम आरोप लगाते हैं और कहते हैं कि वे मजदूर वर्ग को गंभीरता से नहीं लेते। हम कहते हैं कि वे हड़ताल संघर्षों और जुझारू संघर्षों में मजदूर वर्ग को अर्थवाद का कैदी बनाने की कोशिश करते हैं। वे उसे और ज्यादा बड़ी समाजवादी चेतना की ओर ले जाने की कोशिश नहीं करते, वे उसे और बड़ी जनवादी चेतना तक ले जाने का प्रयत्न नहीं करते; निस्संदेह हमने अपने आगे बढ़े हुए कैडर्स में इस कमजोरी पर काबू पा लिया है, या हम काबू पा रहे हैं। मैं नहीं कहूंगा कि पूरे देश में, मगर देश के कई हिस्सों में हमारी पहचान क्या है? क्या क्रांतिकारी ट्रेड यूनियनिस्ट की पहचान है? हमारी पद्धति का बदलना अभी बाकी है। हमने ठीक समझा है कि डांगे लाइन संशोधनवादी व सुधारवादी है। हमने इसे ट्रेड यूनियन में खारिज किया तथा अपने नये संगठन को शुरू किया। मगर यदि हमारा व्यवहार पहले जैसा ही रहता है तो यह एक अनावश्यक और अगंभीर लड़ाई बनकर रह जायेगी। एक ऐसी लड़ाई जिसे शुरू करने की कोई जरूरत नहीं थी। यही वजह है कि हम कहते हैं कि जो प्रस्ताव हमने मंजूर किये हैं- अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता पर प्रस्ताव, हमारे देश के ऊपर अमरीकी साम्राज्यवाद के खतरे पर प्रस्ताव, कृषि क्रांति पर प्रस्ताव, किसानों के समर्थन में प्रस्ताव, जनवादी मोर्चे पर प्रस्ताव- ये सभी प्रस्ताव सिर्फ कुछ नेताओं की चेतना में जमा नहीं रह जाने चाहिए। इसे आम मजदूर की साधारण चेतना का हिस्सा बनना चाहिए। इस बिंदु को हमें हमेशा याद रखना होगा।

हम नई लाइन के साथ एक नये संगठन की शुरूआत कर रहे हैं। हम ट्रेड यूनियन आंदोलन को एक नया आयाम देना चाहते हैं। मगर इसके लिए ट्रेड यूनियन आंदोलन के हरेक नेता को, हममें से हरेक को, खुद अपनी चेतना बदलनी पड़ेगी। हमें पुरानी चेतना व आदतों को छोड़ने की दृढ़ प्रतिज्ञा करनी होगी। तभी कहीं जाकर हम अन्य सभी की सुधारवादी लाइन के खिलाफ एक सही एवं ठोस संघर्ष को आगे ले जा पायेंगे। और हमारा संघर्ष क्या है? हम पहले ही कह चुके हैं कि हमारा संघर्ष मजदूर वर्ग की एकता, ट्रेड यूनियन आंदोलन की एकता का संघर्ष है। यह एकता समस्त मजदूरों तक जानी चाहिए। अगर आप हमारे देश की ट्रेड यूनियनों के आंकड़ों का अध्ययन करेंगे तो आपको मालूम होगा कि मजदूर वर्ग का एक बड़ा हिस्सा अभी तक असंगठित है। यह न तो इंटक में है, न एच एम एस में है, न एटक में है। यदि आप 1968 के हड़ताल संघर्षों को देखें तो पता चलेगा कि इन हड़तालों में हुई 40 प्रतिशत मानव दिवस हानि की हड़तालें ऐसी यूनियनों ने चलाईं थी जो किसी भी केन्द्रीय श्रम संगठन के साथ संबंधित नहीं है। समझिये, ताजे आंकड़े कहते हैं कि इस देश में 40 प्रतिशत मानव दिवसों की हानि ऐसी यूनियनों के संघर्षों से हुई जिनकी संबद्धता किसी केन्द्रीय ट्रेड यूनियन के साथ नहीं है। पिछली साल भारत की कुल हड़तालों में से 47 प्रतिशत हड़तालों की जिम्मेदारी एटक से जुड़ी

यूनियनों के ऊपर थी। इनमें से ज्यादातर हड़तालें पं. बंगाल में हुई। और अब हम पाते हैं कि सबसे महत्वपूर्ण संघर्षों की अगुआई पं. बंगाल की जिन यूनियनों ने की थी, वे यहां मौजूद हैं, और अब उनका एटक के साथ कोई संबंध नहीं है। यह आंकड़ों का वह तथ्य है जो हमारे द्वारा अपना रास्ता चुनने तथा नया संगठन बनाने का निर्णय लेने से काफी पहले दर्ज हो चुका था। यह हमारे लिए गर्व की बात है, मगर इसके बाद भी बड़ी संख्या में हड़तालें उन यूनियनों ने की हैं जो किसी भी केन्द्रीय संगठन के साथ संबद्ध नहीं हैं। ट्रेड यूनियन एकता, प्रतिरोध की एकता का मतलब है, हर मजदूर-भले वह किसी भी संगठन से जुड़ा हो या न जुड़ा हो, वह संगठित हो या असंगठित हो- को एक या दूसरे सवाल पर लामबंद किया जाये, उसे साझे वर्ग संघर्ष में शामिल किया जाये। यही वजह है कि हमें देखना चाहिए कि एकता के लिये जिस संघर्ष को हम चाहते हैं, वह हमारी गतिविधियों व सक्रियता की बुनियाद बने।

अपने आक्रोश में कुछ लोग अपने मुख्य शत्रुओं को भूल कर सारा गुस्सा संशोधनवादियों पर निकाल सकते हैं। यह अक्षम्य होगा। यह ठीक वही बात है जो हम पर हमला करते वक्त संशोधनवादी करते हैं। क्या हम भी वही गलती करें? हम सुधारवाद, संशोधनवाद और ऐसी सभी प्रवृत्तियों से इसलिए लड़ते हैं क्योंकि वे हमारे मुख्य शत्रुओं के खिलाफ हमारे आम वर्ग संघर्ष को नुकसान पहुंचाती है। हर मजदूर को हममें अपने रोजमर्रा के हितों का पवित्र रक्षक दिखना चाहिए। मालिकों के खिलाफ मजदूर वर्ग की एकता का पावन रक्षक। उन्हें महसूस करना चाहिए कि हम संशोधनवादियों से या इंटक की नीतियों से इसलिए लड़ रहे हैं क्योंकि वे आम वर्ग संघर्ष को विघटित करती हैं। उसमें फूट डालती हैं। हमारी यूनियनें अगर संयुक्त मोर्चे की साहसिक कार्यनीति से, जहां संशोधनवादी व सुधारवादी यूनियनों के साथ लोग हैं वहां उनके सामने संयुक्त मोर्चे की साहसिक पेशकशों से डरेंगी तो हम एकता की अपनी कोशिशों में विफल हो जायेंगे। यह समय है जब मजदूर वर्ग एकता की मांग कर रहा है। यह समय है जब मजदूर वर्ग खुद अपने आप यह महसूस कर रहा है कि अगर वह एकजुट नहीं हुआ तो हमले का मुकाबला नहीं कर पायेगा। यह वक्त है जब हमारे संगठन को मैदान में कूद पड़ना चाहिए और सभी से कहना चाहिए कि एकता का, साझी कार्यवाहियों, संयुक्त कार्यवाहियों का बैनर यही है। जो भी एकता चाहता है वह चाहे जिस संगठन या संबद्धता का क्यों न हो, इस बैनर के साथ जुड़े। सारी नीतियों का तजुर्बा ले और खुद अपने लिए सही रास्ते का खुद निर्धारण करे। मजदूर वर्ग के लिये यही हमारा संदेश है कि हम इस या उस गुट के लिये बना कोई पृथक संगठन नहीं हैं, उनके सबके अपने संगठन हैं; मगर इसी के साथ सुधारवादी आदतों से कोई समझौता नहीं, संशोधनवादी भीतरघात से कोई समझौता नहीं, एकता की झूठी अवधारणा के नाम पर मजदूर वर्ग के साथ कोई

धोखाधड़ी नहीं। मजदूर वर्ग की एकता, मजदूर वर्ग का संघर्ष और रोज के संघर्षों में सुधारवादी भीतरघात से लड़ाई- यह सब साथ-साथ चलना चाहिए। मजदूर वर्ग को समझना चाहिए कि सुधारवादी विचार और व्यवहार के विरुद्ध संघर्ष इस या उस पार्टी के बीच चलने वाली पार्टीगत लड़ाई नहीं है। बल्कि मजदूर वर्ग के लिए सही और गलत नीति के बीच की लड़ाई है। मजदूर वर्ग को एकजुट करने और उसी के साथ सारी विषैली विचारधाराओं को अलग-थलग डालने की कार्यनीति यही है।

आपको याद रखना चाहिए कि ट्रेड यूनियनों में सुधारवाद के विरुद्ध लड़ाई को लेनिन कितना अधिक महत्व देते थे। उन्होंने जर्मनी, इंग्लैंड और अमरीका के विकसित मजदूरों से कहा था कि अगर तुम लोग ट्रेड यूनियनों में से सुधारवादी प्रभाव को खत्म नहीं करोगे, सुधारवादी नेताओं को खदेड़ बाहर नहीं करोगे तो मजदूर वर्ग की राजनीतिक सत्ता के सवाल को कभी उठा ही नहीं सकोगे। इसे हासिल करना है तो मजदूरों के ऊपर आपका असर होना चाहिए, उनका भरोसा जीता जाना चाहिए। इसलिए ट्रेड यूनियनों में सुधारवादी व्यवहार के विरुद्ध संघर्ष को मजदूरों के बीच एकता के लिए बढ़ते हुए संघर्ष के साथ जोड़कर चलाया जाना चाहिए। इन दोनों को अलग नहीं किया जा सकता। अगर ये दोनों अलग हुए तो आप मिट जाएंगे। ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। जितना अधिक आप कार्यवाही की एकता और संघर्ष को संगठित करते जायेंगे उतना ही सुधारवादियों के लिये मजदूरों के साथ धोखाधड़ी करना मुश्किल होता जायेगा। सुधारवाद और उसके ठोस व्यवहार के खिलाफ अपने प्रचार को आप जितना समुचित तरीके से आगे ले जायेंगे, पूंजीपति वर्ग के खिलाफ मजदूर वर्ग की संयुक्त कार्यवाहियों को संगठित करना आपके लिये उतना ही आसान होता चला जायेगा। इसके लिए आपको, पहले अपने आपको पूरी तरह से पुर्नसंगठित करना पड़ेगा। मानिये कि हम संबद्धता के लिये शर्त लगाते हैं कि केवल उन्हीं यूनियनों को संबद्धता दी जायेगी जो कम से कम अपने संविधान का पालन करती हैं। यानि कि नियमित रूप से अपनी मासिक बैठक करती हों, नियमित रूप से अपनी कार्यकारिणी बैठकें करती हों, बिना मजदूरों की कार्यकारिणी से चर्चा किये कोई निर्णय न लेती हों। तो यहां मौजूद यूनियनों में से कितनी यूनियनें संबद्ध की जा सकेंगी। यूनियनों में जनवादी कार्यप्रणाली का अभाव हमारे देश के ट्रेड यूनियन आंदोलन की बुनियादी बीमारी है। जनवादी कार्यप्रणाली का मतलब क्या है ? क्या यह तथ्य नहीं है कि अधिकांश यूनियनों में साधारण मजदूर की स्थिति एक अतिथि जैसी होती है। ऐसे व्यक्ति की तरह नहीं होती जिसका कि वह यूनियन किला है उसका अपना घर है। अच्छे, सोद्देश्य, ईमानदार और चरित्रवान लोग, इन यूनियनों पर हावी हैं और जो खुद बाद में धीरे-धीरे ट्रेड यूनियन नौकरशाह बन जाते हैं। मजदूरों के बहुमत का एक व्यापक विस्तृत संगठन बनाने की बजाय

ट्रेड यूनियनों को कुछ नेताओं का विशेष क्षेत्र बना देने की प्रवृत्ति पाई जाती है। यूनियन मजदूरों की वफादारी का केंद्र बिंदु होती है। मजदूर वफादार होते हैं। वे हड़ताल संघर्षों में भाग लेते हैं। वे यूनियन का चंदा देते हैं। मगर फैसले लेने का काम वे नेताओं पर छोड़ देते हैं। हमने जो चेतना विकसित की है वह ऐसी है कि कोई भी मजदूर यह आपत्ति नहीं करता कि आप यूनियन को अलोकतांत्रिक तरीके से चला रहे हैं। वे सोचते हैं कि यूनियनें ऐसे ही चलाई जाती हैं। यूनियन का कामकाज चलाना नेताओं का काम है। कभी कभार, खासतौर से जब हड़ताल हो तब हम भी आयेंगे और शामिल हो जायेंगे। यदि हम यूनियनें इसी तरह से चलाते रहे तो सुधारवादियों और हमारे बीच क्या अंतर रहेगा। और हम ये कहते हैं कि हम मजदूर वर्ग को एकताबद्ध करना चाहते हैं। जब हम कहते हैं कि हम मजदूर वर्ग का प्रतिरोध संगठित करना चाहते हैं, तो हम सबसे पहले यही कहना चाहेंगे कि हमारी यूनियनें अपने बैनर के साथ जुड़े प्रत्येक मजदूर के लिये जीवंत बनें। हर मजदूर को यह महसूस करना चाहिए कि यह यूनियन नेताओं का किला नहीं है, मेरा किला है। नेता का घर नहीं है बल्कि आम मजदूर का घर है। यही हमारी नीति होनी चाहिए- वर्ना हमारे और सुधारवादियों के बीच कोई अंतर ही नहीं रहेगा।

ट्रेड यूनियन संगठन के एक बुनियादी सिद्धांत को लें, जिसकी क्रांतिकारी अनुभव ने हमने शिक्षा दी, जो एक जमाने में प्रत्येक क्रांतिकारी के लिये अत्यावश्यक माना जाता था, जिसकी वजह से आम मजदूरों में से नेता बनकर उभरे, विराट यूनियनें बनीं और विराट हड़ताल संघर्ष लड़े जा सकें। हड़ताल संघर्षों के दौरान बड़ी हड़तालों को संचालित करने के लिये यूनियनों की कार्यकारिणियां पर्याप्त व्यापक आधार नहीं है। इसलिए हड़ताल कमेटियों का चुनाव -- सिर्फ यूनियन सदस्यों के बीच से ही नहीं -- आम मजदूरों के बीच से किया जाना चाहिए, और यही हड़ताल के संचालन का संगठन होना चाहिए। हड़ताल का यही हथियार है, जिसके जरिये संघर्ष के दौरान एक तरफ सुधारवादी और संशोधनवादियों और दूसरी तरफ क्रांतिकारियों के बीच की लड़ाई लड़ी जा सकती है। हड़ताल कमेटियों में सुधारवादी नीतियां पूरी तरह से अलग थलग पड़ जाती थीं और क्रांतिकारी ताकतें आगे बढ़ जाती थीं। मगर आजकल हड़तालें, बिना हड़ताल कमेटियों के ही, महीनों तक चलती रहती हैं। यह मूलरूप से एक बडी गलती है। एक ऐसी गलत बात है जिसकी हमें आखिर में कुछ न कुछ कीमत चुकानी पड़ती है। क्रांतिकारी अनुभवों से मिली शिक्षा से आप जब भी हटेंगे, जब भी उनका उल्लंघन करेंगे तब आपको कहीं न कहीं पूंजीपति वर्ग की लात खानी पड़ेगी। हम यूनियनों में, हड़तालों में, हर जगह जनवादी कार्यप्रणाली की बात करते हैं क्योंकि हम चाहते हैं कि मजदूर आम संघर्षों में दर्शक की तरह नहीं, सक्रिय भागीदार व सक्रिय नेता की तरह से हिस्सा

लें। केवल तभी, ट्रेड यूनियन आंदोलन पर से सुधारवादी-संशोधनवादियों की जकड़न को तोड़ा जा सकता है।

आम तौर से हमारा काम- निरंतर राजनीतिक व ट्रेड यूनियन काम- कारखानों के बाहर होता है। वह राजनीतिक काम, जो ट्रेड यूनियन काम का भी हिस्सा है, कारखानों के भीतर उस काम की निरंतरता बहुत दुर्लभ है। इसका मतलब क्या है ? हर जगह के ट्रेड यूनियन आंदोलन के क्रांतिकारी अनुभवों ने इस बात पर जोर क्यों दिया है कि हर ट्रेड यूनियन के लिये, उसके राजनीतिक आर्थिक कामकाज के लिये बुनियादी चीज, बुनियादी जगह फैक्ट्री होनी चाहिए। क्योंकि यहीं आप उन पिछड़ी चेतना वाले ऐसे गैर ट्रेड यूनियन श्रमिकों को पकड़ते हैं, जो ट्रेड यूनियन का सदस्यता चंदा भी नहीं देते। अगर आप इन्हें पकड़ना चाहते हैं, अगर आप इनके साथ संयुक्त मोर्चा बनाना चाहते हैं, अगर आप सबसे पिछड़ी चेतना वाले मजदूरों के साथ संयुक्त मोर्चा बनाना चाहते हैं, तो उन्हें वहीं पकड़िये जहां वे हैं। वह आप की गेट मीटिंगें तक नहीं सुनता, वह आपकी आमसभाओं में भी नहीं आयेगा। मगर चूंकि पूंजीपति उसे कारखाने के अंदर लाता है इसलिए हमें उसे वहीं पकड़ना चाहिए। इन गैर ट्रेड यूनियन मजदूरों के साथ संयुक्त मोर्चा बनाकर, उसके जरिये एकता की कायमी व निर्माण के तरीके हैं। कारखाने के अंदर तीन यूनियनें या कई यूनियनें हो सकती हैं। कारखानों के आधार पर ही नीचे से मजदूरों का एक ऐसा संयुक्त मोर्चा बन सकता है जिसके जरिये दीगर यूनियनों के बड़े नेताओं के विरोध को धराशायी कर दिया जाये। यही वजह है कि हम कहते हैं कि मौजूदा वक्त में जब तक कामकाज के पुराने तरीके नहीं बदले जाते, आंदोलन के पुराने तौर तरीकों में बदलाव नहीं होता और बुनियादी सर्वहारा कार्यप्रणाली, मजदूरों की जनवादी कार्यप्रणाली नहीं अपनाई जाती तब तक आप मजदूरों की एकता बनाने में कामयाब नहीं हो सकते, एक साझा प्रतिरोध को संगठित करने में सक्षम नहीं हो सकते। केवल अच्छे इरादे रखना, अच्छी नीतियां रखना ही पर्याप्त नहीं है, सही सांगठनिक व्यवहार होना भी जरूरी है। केवल तभी जाकर अच्छी नीतियों के नतीजे हासिल किये जा सकते हैं।

हमारी मौजूदा कार्यप्रणाली और सुधारवादी यूनियनों की कार्यप्रणाली अपने सार रूप में सुधारवाद से निकल कर आती है। आपकी जैसी लाइन होगी, वैसी आपकी कार्यप्रणाली होगी। यदि आप अदालतों में विश्वास करते हैं, यदि आप समझौता मशीनरी में विश्वास करते हैं, यदि आप पूंजीवादी-सामंती सरकारों द्वारा बनाई गई श्रमिक शिक्षा योजनाओं में विश्वास करते हैं, यदि आप सिर्फ ज्ञापनों में भरोसा करते हैं तो आपके पास वैसा ही संगठन होगा। एक जैसे सोच वाले कुछ मुट्ठी भर ऐसे नेता जो सभी समझौता कार्यवाहियों को सहज रूप में स्वीकार कर लेते हैं और मजदूरों को उनसे दूर रखते हैं। मजदूर, संगठन के सदस्य भर हो सकते हैं, मगर उनसे

परामर्श कभी नहीं किया जाता। डांगे गुट की वर्ग सहयोगवादी लाइन ने ऐसे ही संगठन को जन्म दिया है। इंटक की लाइन ने भी ऐसे ही संगठन को जन्म दिया है। हम जो इन सबसे नाता तोड़ रहे हैं, उन्हें सुनिश्चित करना चाहिए कि ट्रेड यूनियन संगठनों की जगह वास्तविक जनतांत्रिक संगठन लें।

साथियो ने पूछा है कि समझौता अदालतों और सरकारी मशीनरी के बारे में हमें क्या करना चाहिए? हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि वेज बोर्ड, ये श्रमिक शिक्षा योजनाएं, समझौता कार्यवाहियां, पंच फैसले, तमाम सारे श्रमिक अधिनियम- ये सभी वर्ग संघर्ष पर "ब्रेक" लगाने की शासक वर्गों की कोशिशें हैं। यह विचार, यह अवधारणा हमारी होनी चाहिए। यह दृष्टिकोण हमारा होना चाहिए। मगर इसका यह मतलब नहीं है कि आप बस कल से ही इन सबका बहिष्कार कर दें। सवाल ये है कि आप किस दृष्टिकोण से उनका इस्तेमाल करते हैं और मजदूरों को क्या सिखाते हैं। जब जरूरी हो तब इनका उपयोग करते हुए हम उनके बारे में कोई गलतफहमी पैदा नहीं करते। अपनी ईमानदार, जुझारू और सही कार्यप्रणाली से हम मजदूरों के सामने साबित करके बताते हैं कि ये सारी विधियां हमारे संघर्षों में देरी करने और धोखाधड़ी के लिये हैं। हमें सिर्फ अपने संगठन में विश्वास व्यक्त करना चाहिए। मगर सुधारवादी और संशोधनवादी संघर्ष से कतराने के लिये गलतफहमी पैदा करते हैं। चाहे समझौता कार्यवाहियों से हल निकले, चाहे आर्बिट्रेशन से फैसला हो, या कहीं और से नतीजा आये या फिर कानूनों से परिणाम आये- यह इस पर निर्भर करता है कि पूंजीवाद को हराने के लिये आपका आंदोलन कितना बड़ा है। अगर आपके पास बड़ा डण्डा है तो समझौता कार्यवाही से अच्छा हल निकल सकता है। अगर आपके पास डण्डा नहीं है तो यह आपको बर्बाद कर देगी। क्योंकि अंत में सवाल यहीं पर आता है कि वर्ग संघर्ष के एक वक्त विशेष में दोनों वर्गों की तुलनात्मक ताकत क्या है।

इसी तरह कामरेड्स, जब हम ट्रेड यूनियन आंदोलन में फूट की बात कर रहे हैं तो हमें इसके राजनीतिक उद्‌गम को भी पहचानना होगा। इंटक, कांग्रेस की विचार धारा पर आधारित हैं, एच एम एस भी इसी तरह की है, अब डांगेवादी भी इसी विचारधारा का एक और रूप धारण किये हैं। यह मजदूर वर्ग के ऊपर पूंजीवादी विचारधारा का असर है।

एक समय था जब हमारे सभी कामरेड्स कहते थे कि इंटक एक दलाल यूनियन है। सही है, इसमें कोई शक नहीं है कि इसके नेता खुल्लमखुल्ला वर्ग सहयोगवादियों की तरह आचरण करते हैं। उनमें से कुछ पूंजीपतियों से पैसे भी लेते हैं, उन्होंने दगा और विश्वासघात किये मगर आज भी मजदूरों का एक हिस्सा उनके पीछे है। क्यों? और हम बेहद ईमानदार और चरित्रवान हैं, मगर वे हमारे साथ नहीं आते। इसलिए

क्योंकि इंटक, एक समय मजदूर वर्ग पर पूंजीपतियों की राष्ट्रीय विचारधारा के प्रभाव का प्रतिनिधित्व करती थी। उसकी राजनीतिक अनुयायी थी। आज भी काफी हद तक वह प्रभाव कायम है। मजदूर कहते हैं कि वह फलां नेता खराब है, मगर हम कांग्रेस को नहीं छोड़ रहे। इसीलिए एकता के लिये संघर्ष करते समय हमें कांग्रेस के राजनीतिक प्रभाव से जूझना पड़ता है। हमें धीरज के साथ इस विचारधारा से लड़ना होगा। यह लक्ष्य केवल ट्रेड यूनियन मोर्चे पर इन्हें बेनकाब करने से हासिल नहीं किया जा सकता। बंगाल चटकल मजदूर यूनियन की सदस्यता आज 94000 है। एक संयुक्त मोर्चे की हड़ताल हुई, जिसमें इंटक भी शामिल थी। इसके और लाल डण्डे के बीच का अवरोध हटा और एक विशाल समूह आपके साथ जुड़ा और उसने आपकी सदस्यता ले ली। यह सब इसलिए हुआ क्योंकि आपने समझा कि वे अभी भी ताकत हैं, उनके साथ संयुक्त मोर्चा बनाया जाना चाहिए। आपने उन्हें दलाल कह कर नहीं बुलाया। जब आपने संयुक्त मोर्चे की नीति को ठीक तरीके से लागू करते हुए, आर्थिक संघर्षों का ताकतवर 'लीवर', घुमाया तो काफी हद तक- पूरी तरह से नहीं मगर काफी हद तक- कम से कम ट्रेड यूनियन मोर्चे पर, आप मजदूरों को पूंजीवादी नेताओं के चंगुल से आजाद कराने में सफल रहे। अपने प्रभाव के विस्तार के बंद दरवाजों को आपने खोल दिया।

एक मजदूर विरोधी समझौते का मतलब यह नहीं है कि वे मिट गये। कोई एक मिट सकता है। एकाध खास व्यक्ति मजदूरों की नजर से उतर सकता है, मगर संगठन नहीं मिट जाता। यह इसलिए क्योंकि कुछ राजनीतिक संबद्धतायें हैं। यही वजह है कि इंटक नेतृत्व, एटक नेतृत्व और एच एम एस नेतृत्व के सुधारवाद के विरुद्ध, उनके असर को ध्यान में रखते हुए ठोस रूप से लड़ाई चलाई जानी चाहिए। और हर बार लड़ाई के बाद हमें ऐसे लोगों के रूप में आगे आना चाहिए जो मजदूर वर्ग की एकता के लिये संघर्षरत हैं, मजदूर वर्ग के संयुक्त प्रतिरोध के लिये प्रयासरत हैं। वैचारिक लड़ाई को मजदूर वर्ग की कार्यवाही की एकता का समर्थन करने वाली हर कार्यनीति के साथ जोड़कर चलाना हमारी नीति होनी चाहिए ताकि संयुक्त प्रतिरोध और संयुक्त संघर्षों को आगे ले जाया जा सके। अगर आपने इसमें थोड़ा सा भी भटकाव दिखाया, कोई भी गलती की तो आपको भारी आघात पहुंचेगा, बड़ा धक्का लगेगा और बड़ा नुकसान उठाना पड़ेगा।

जब हम मजदूर वर्ग के राजनीतिकरण की बात करते हैं, मजदूर वर्ग को अधिक से अधिक आम वर्गीय चेतना तक लाने की बात करते हैं तो हमें प्रत्यक्ष आर्थिक संघर्षों के ताकतवर '*लीवर*' के महत्व को घटाकर देखने की प्रवृत्ति से बचना चाहिए। एक बार पुन: पं. बंगाल को देखिये। 1967 के चुनावों तक हिंदी भाषी जूट मजदूर कांग्रेस से अलग नहीं हुआ था। 1969 के चुनाव में वह कांग्रेस से थोड़ा सा

हटा, 1969 की जूट हड़ताल ने सारे जूट मजदूरों को साझी कार्यवाहियों में उतार दिया और अवरोध पूरी तरह से टूट गया। आर्थिक संघर्षों के इस शक्तिशाली '*लीवर*' को कई यूनियनों के संयुक्त मोर्चे के जरिये संचालित करके, वर्षों पुराने अवरोध तोड़े गये, मजदूरों को एक साथ लाया गया। मगर यदि हम यहीं पर चुप मारकर बैठ जायेंगे, इसे और आगे ले जाते हुए राजनीतिक चेतना विकसित नहीं करेंगे तो हमें नुकसान उठाना पड़ेगा। मजदूर वर्ग की एकता की हमारी लगातार जारी लड़ाई में, संयुक्त मोर्चे की समझदारी व संयुक्त कार्यवाहियों के लिये जो भी रूप जरूरी हों, हमें उन्हें अपनाने के लिये तैयार रहना चाहिए।

हमारे मजदूर वर्ग में भाषायी उन्माद के जहर का प्रवेश कराने की कोशिशें की गई हैं। अगर मजदूर यह समझने लगे कि-- भाषा के आधार पर पूंजीपति के साथ उसका रिश्ता अन्य भाषा बोलने वाले मजदूर के साथ, साझे शोषण के रिश्ते से ज्यादा मजबूत है-- तो वह मिट जायेगा। मगर ठीक यही शिव सैना द्वारा बंबई में सिखाया जा रहा है। शिवसैना उस दौर में उभरी जब सुधारवादियों ने मजदूर वर्ग के संघर्षों को त्याग दिया था। वास्तव में तो डांगेवादी सुधारवाद, एसएसपी का सुधारवाद, इन सभी पार्टियों का भाषायी उन्माद शिवसैना का वैचारिक आधार बनाने के लिये जिम्मेदार है। ठीक इसी तरह का घटना विकास तमिलनाडु में हुआ। आंध्र प्रदेश में तो यह सिर्फ भाषायी उन्माद नहीं है वहां तेलंगाना और आंध्र को एक दूसरे के विरुद्ध मुद्दा बनाया गया। एक यूनियन में हमने पाया कि मजदूरों का एक हिस्सा पृथक तेलंगाना की मांग करने वालों के साथ है तो दूसरा विशाल आंध्र का समर्थक है। मजदूर वर्ग विभाजित है। किस मुद्दे पर ? उन्हें कौन विभाजित कर रहा है ? जमींदार और सामंत। दूसरी तरफ जनसंघ सांप्रदायिक दंगे कराने की कोशिशें कर रही है। अहमदाबाद, रांची, मेरठ और अब महाराष्ट्र में, मुस्लिम मजदूरों के जीवन व संपत्ति पर हमलों ने मजदूरों को बांटने के खतरनाक आक्रमणों को उजागर कर दिया है। जनसंघ, शिवसैना तथा अन्य कम्युनिस्ट विरोधी संगठन ट्रेड यूनियन एकता को बिखेर देने के लिये इस हथियार का उपयोग कर रहे हैं ताकि बंबई की ट्रेड यूनियनें लंबे समय तक उनको चुनौती देने का साहस न जुटा पाये। ट्रेड यूनियनों में एक तरह से जीवन तभी आता है जब आम मजदूर लड़ना शुरू करता है। महाराष्ट्रियनों को रोजगार देने के नाम पर शिव सैना ने जब पूंजीपतियों को हड़ताल तोड़कों की सप्लाई शुरू कर दी तब मजदूर ने लड़ना शुरू कर दिया। यह साझा आंदोलन को बिखेर देने का योजनाबद्ध मामला है, इसके पीछे सी आई ए का भी हाथ है। आप देखते हैं कि कई राज्यों की कांग्रेस सरकारें भी कम्युनिस्टों के खिलाफ इसी हथियार का सहारा लेती है। महाराष्ट्र सरकार शिव सैना की मदद लेती है और उसका समर्थन करती है। कांग्रेस के नेता आपसी झगड़े में यही हथियार एक दूसरे के खिलाफ आजमाते हैं, जैसा कि सिंडीकेट सरकार के दौरान अहमदाबाद में हुआ। दिल्ली में वे राष्ट्रीय अखण्डता पर सम्मेलन

करते हैं और बंबई में दंगा भड़काने वालों का समर्थन करते हैं। इस नई चुनौती से अगर समय रहते नहीं निबटा गया तो मजदूर वर्ग का आम आंदोलन, आम ट्रेड यूनियन आंदोलन खतरे में पड़ जायेगा। भाषायी उन्मादियों, सांप्रदायिक दंगाइयों और जातिवादियों के बीच आम ट्रेड यूनियन आंदोलन बहुत ही कम बच पायेगा। ये सभी मजदूरों की चेतना को बिगाड़ने के काम में जुटे हैं। अगर हम इस पर पर्याप्त ध्यान देते हुए इस शैतानियत से निबटने के ठोस कदम निर्धारित नहीं करेंगे तो हमारा संगठन भी ज्यादा कुछ प्रगति नहीं कर पायेगा।

और अंत में कामरेड्स में यह कहना चाहता हूं कि हमने अपने संविधान में आम तरीके से यह संकेत दे दिया है कि किस तरह से मजदूर वर्ग ट्रेड यूनियन अर्थवाद के दायरे से वास्तव में बाहर निकले और आगे बढ़े। पं. बंगाल और केरल की दो संयुक्त मोर्चा सरकारों के अनुभवों ने मजदूर वर्ग पर पहले ही काफी अच्छा प्रभाव डाला है। मैं यहां मजदूर वर्ग के हितों की रक्षा के लिये इन दोनों सरकारों द्वारा की गई कार्यवाहियों का उल्लेख नहीं कर रहा। इस बारे में पहले के वक्ता जिक्र कर चुके हैं। मैं यहां मजदूर वर्ग के राजनीतिक तजुर्बे का उल्लेख कर रहा हूं। यह राजनीतिक तजुर्बा क्या है? हां, संयुक्त मोर्चा सरकारों ने इसे तमाम तरीके की रियायतें दी हैं। इसका मतलब क्या है? जब देश में मजदूर वर्ग कांग्रेस को हटाने के साझा काम के लिये अन्य जनवादी शक्तियों के साथ अपने आपको सिर्फ आर्थिक प्रश्नों तक सीमित न रखे, बल्कि अपने आपको मौजूदा सत्ता के विरुद्ध जारी जन संघर्ष का हिस्सा माने और इस संघर्ष में अपना योगदान दे, तो न केवल जनवादी ताकतें मजबूत होती हैं बल्कि आर्थिक मांगों के लिये होने वाले मजदूरों के संघर्ष भी मजबूत होते हैं। लाखों लोगों को इस साधारण से सच को सीखना चाहिए कि जैसे ही यह होता, सरकार हमला करने लगती है। लेकिन क्यों? इसलिए कि जब मजदूर वर्ग और आम जनता एकजुट होते हैं तब वे जबर्दस्त तेजी से आगे बढ़ते हैं। और यहां फिर देखने की जरूरत हैं कि इससे किसे डर लगता है? केवल पूंजीपति ही नहीं, कांग्रेस पार्टियां ही नहीं, हमारे पुराने सहयोगी डांगे के उन संशोधनवादियों को भी डर लगने लगता है जो कल तक हमारे साथ संयुक्त मोर्चे में थे। बाद में उन्होंने संयुक्त मोर्चे से दगाबाजी की। वे डरते हैं क्योंकि उन्हें भरोसा नहीं है कि अगर ये आम मजदूर किसान असल में आगे बढ़ चले तो कहां तक जायेंगे। उनके निहित स्वार्थ भी प्रभावित होते हैं। यह आम राजनीतिक अनुभव हमें अन्य राज्यों के मजदूर वर्ग के कानों तक पहुंचाना होगा, उन्हें बताना होगा कि अगर ट्रेड यूनियनें जनता के अन्य हिस्सों की मांग उठाते हुए जनवादी शक्तियों को मुक्त करने के लिये पहल कदमी करें, तो इस तरह का जनवादी गठबंधन कभी भी हासिल किया जा सकता है। पं. बंगाल में एक दो वर्ष पहले मजदूरों के बीच एक आंदोलन –छोटे किसानों

और बगा4दारों की फसल की जमींदारों से रक्षा करने के लिये जाने का आंदोलन- शुरू हुआ था। यह शुरूआत थी। लेकिन हर जगह कई बार नारे तो दिये जाते हैं मगर चेतना अर्थवाद में इतनी गहरे तक जमी होती है कि वास्तविक व्यवहार में काफी कम ही हो पाता है। हमारी ट्रेड यूनियनें और अन्य संगठन बेहद घातक भूल करेंगी यदि वे पुरानी विचारधारा के आधार पर अपनी लड़ाई लड़ने की कोशिश करती हैं, यदि वे मजदूरों से कहती हैं कि आर्थिक लड़ाई अन्य जनवादी शक्तियों से अलग-थलग रहकर, बिना उनकी चेतना में लाये, बिना उनका सक्रिय समर्थन लिये लड़ी जा सकती हैं। वर्ग संघर्ष इतना तीखा होने वाला है कि हर वक्त उस पर तीखे हमले होंगे। मजदूर वर्ग इन हमलों का तब तक मुकाबला नहीं कर सकता जब तक कि जनवादी शक्तियों के बीच उसके ताकतवर सहयोगी न हों। हमें बार-बार मजदूरों को यह समझाना होगा ताकि वे इस दृष्टिकोण से पूरी तरह लैस हो जायें।

हमने कहा है कि अमरीकी साम्राज्यवाद बढ़ रहा है और हमारे देश की आजादी के समक्ष चुनौती पेश कर रहा है। मगर इसी के साथ वह मजदूर वर्ग के रोजगार भी छीन रहा है। चूंकि अमरीकी कर्जों पर निर्भरता की वजह से संकट बढ़ा है, अवमूल्यन ने इसे और बढ़ाते हुए इंजीनियरिंग कारखानों की बंदी तक पहुंचा दिया है, मजदूरों से रोजगार छिन रहे हैं। मगर ट्रेड यूनियन आंदोलन इसके बारे में सचेत नहीं है। आज वे कहते हैं कि इंजीनियरिंग माल का निर्यात पिछली साल में 30 फीसदी बढ़ गया! कैसे? केवल इसलिए कि इस देश को कम कीमतों पर माल बेचने के लिये विवश किया गया। पूंजीपतियों के मुनाफे या तो सब्सिडियों या कम मजदूरी दरों से बने। इस तरह निर्यात की कीमत जनता व मजदूर वर्ग को चुकानी पड़ी। अर्थव्यवस्था की अमरीका एवं अन्य पर निर्भरता देश के आर्थिक संकट को बढ़ा रही है और असल में तो हमारे लाखों मजदूरों के रोजगार को प्रभावित करना शुरू कर चुकी है। मगर यदि आप अपने सामने सिर्फ एक इंजीनियरिंग कारखाने के मालिक को देखते हैं। पूरी सामाजिक व्यवस्था और अमरीका पर निर्भरता को नहीं देखते तो आप मजदूर को कुछ भी नहीं सिखा पायेंगे। इंटक ऐसा नहीं करती, एच एम एस ऐसा नहीं करती, एटक पर हावी नेतृत्व यदा कदा ही इसके बारे में बोलता है। यही वह जगह है जब मजदूर वर्ग राष्ट्रीय हितों के बारे में ज्यादा सतर्क हो सकता है, देश की समूची जनता के हितों की हिफाजत के लिये, देश के शोषितों के लिये ज्यादा मुस्तैद हो सकता है। क्योंकि इस नीति के पहले हमले का अर्थ मजदूर वर्ग की रोजगार हानि या उसके वेतन में कटौती होती है।

संशोधनवादी लाइन ने मजदूर वर्ग की एकता में बिखराव पैदा किया है। यह हमारा काम और हमारा कर्तव्य है कि मजदूर वर्ग की कतारों की एकता बहाल हो, इसकी लड़ाकू ताकतें संगठित हों। एकता के लिये संघर्ष एक गंभीर संघर्ष है। इसे

भारी सुस्पष्टता एवं सौदेबाजी में भारी आत्म विश्वास के साथ चलाया जाना चाहिए। इस प्रक्रिया के दौरान फूट परस्त ताकतों को अलग-थलग किया जाना चाहिए। केवल तभी हमारा संगठन मजदूर वर्ग की लड़ाकू शक्ति का विकास कर पायेगा, केवल तभी हमारा संगठन मजदूर वर्ग की रक्षा का अस्त्र, उसकी चेतना को आगे बढ़ाने का प्रभावी हथियार बन पायेगा। ताकि वे उन राजनीतिक दायित्वों को पूरा कर सकें, जो इतिहास ने उन पर सौंपे हैं। केवल तभी हम मौजूदा पूंजीवादी-भूस्वामी सरकार को हटाकर जनता की एक असली सरकार बनाने के लिये जरूरी आम जनवादी आंदोलन की पहल हस्तगत कर सकेंगे। केवल तभी हम किसानों व अन्य जनवादी ताकतों के साथ एक ऐसा स्थायी गठबंधन बना सकेंगे जो जनता का शोषण करने वाले तथा साम्राज्यवादी दबाव में झुकने वाले शासक वर्गों के विरुद्ध अपनी मुहिम को विजय यात्रा बनाये।

ट्रेड यूनियन आंदोलन यह कभी नहीं भूल सकता कि यदि मजदूर वर्ग सचेत रूप से सत्ता पर कब्जा करने का संघर्ष नहीं छेड़ता तो समाजवाद तथा शोषण से आजादी सिर्फ शब्दों में रह जायेंगे। और उसका पहला कदम है मौजूदा पूंजीपति भूस्वामी सरकार को हटाकर जनता की एक वास्तविक सरकार की कायमी। मौजूदा सरकार को हटाने के लिये लगातार संघर्ष, किसानों के साथ गठबंधन बनाकर जनवादी संघर्षों की पहल करना व उनमें शामिल होना, कृषि क्रांति के संघर्षों का समर्थन करना, मौजूदा सरकार के हर आक्रमण के खिलाफ हर कदम पर लड़ना और इसके लिये सभी जनवादी शक्तियों के संयुक्त मोर्चे की कायमी हेतु अपनी पूरी ताकत झोंक देना- ट्रेड यूनियन आंदोलन के आवश्यक कार्यभार हैं। हम जिस हद तक इन्हें पूरा करेंगे उस हद तक शोषण के विरुद्ध हमारा रास्ता और साफ होगा।

बहुत बहुत धन्यवाद

जनवादी कार्य पद्धति

(सीटू के नौवें राष्ट्रीय सम्मेलन, 20-26 अप्रैल 1997 द्वारा स्वीकृत नीति-दस्तावेज)

1- सी आइ टी यू सभी प्रकार के शोषण से समाज की पूर्ण मुक्ति चाहता है। यह मुक्ति केवल समाजवादी रूपांतरण से प्राप्त की जा सकती है। सी आइ टी यू ने अपने संविधान में घोषणा की है कि "उसका दृढ़ विश्वास है कि वर्ग संघर्ष के बिना सामाजिक रूपान्तरण नहीं हो सकता और वह श्रमिक वर्ग को वर्ग सहयोग के पथ पर ले जाने के प्रयासों का निरंतर प्रतिकार करता रहेगा।"

2- वर्ग संघर्ष के लिए इस प्रतिबद्धता तथा श्रमिक आंदोलन में वर्ग सहयोग की नीति से लड़ने के संकल्प को श्रमिक वर्ग की पंक्तियों में विशाल एकता को सुनिश्चित बना कर और संगठन में सभी पक्षों से तथा सभी स्तर पर जनवादी कामकाजी कार्यपद्धति को लागू करके ही पूर्ण किया जा सकता है। अतः सी आइ टी यू के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य जहां तक संभव हो सके अधिक से अधिक ट्रेड यूनियन जनवाद को सुनिश्चित बनाना है।

चुनौती तथा प्रत्युत्तर

3- इसलिये संगठन में जनवादी कार्यपद्धति को सुनिश्चित बनाने के उद्देश्य से सी आइ टी यू के संविधान में कुछ विशेष प्रावधान किये गये हैं जिनका अनुसरण किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त सी आइ टी यू के स्थापना सम्मेलन में कामरेड बी टी रणदिवे ने भाषण देते समय ट्रेड यूनियन जनवाद के वास्तविक अर्थों व नीति के अत्याधिक महत्व पर बल दिया था।

4- जहां श्रमिक आंदोलन अपनी अवधारणा में सामाजिक रुपांतरण के साथ वर्ग संघर्ष के लिये प्रतिबद्ध होता है और उसके लिये सभी स्थितियों में जनवादी कार्य पद्धति भारी महत्व रखती हैं। वहीं पूंजी के सभी हमलों का सामना करते समय इसकी अनिवार्यता स्पष्ट रूप से उत्पन्न हो जाती है। भारत में शायद ही पहले कभी श्रमिक वर्ग के लिये अपनी संपूर्ण शक्ति को एकजुट एवं लामबंद करने की नितांत आवश्यकता उत्पन्न हुई हो जितनी वर्तमान में है। वष 1991 के मध्य से विनाशकारी आर्थिक नीति के वास्तविक खतरे ने देश के श्रमिक वर्ग को इस चुनौतीपूर्ण स्थिति में ला खड़ा किया है।

5- सी आइ टी यू ने तत्काल इस चुनौती का प्रत्युत्तर दिया है, इसमें संदेह नहीं। उसने निरंतर श्रम साध्य प्रयास करके प्रमुख केन्द्रीय श्रमिक संगठनों तथा औद्योगिक

महासंघों (फेडरेशन्स) पर आधारित एक संयुक्त मंच का गठन किया, आर्थिक नीतियों के विरुद्ध संघर्ष में स्पांस्परिंग कमेटी की स्थापना की गई और बाद के चरण में जन संगठनों के राष्ट्रीय मंच का गठन किया गया जिसमें श्रमजीवी जनता की अन्य सभी श्रेणियों और खेत मजदूर, किसान सभाओं, युवाओं, छात्रों तथा महिला संगठनों जैसे जन संगठनों को सम्मिलित किया गया। किन्तु इस प्रक्रिया के प्रारंभिक चरणों में संपूर्ण श्रमिक वर्ग तथा जनता की अन्य श्रेणियों को लामबंद करने के ऐतिहासिक कार्य को पूर्ण करने, इस नीति का प्रतिकार करने और अन्ततोगत्वा उसे परास्त करने के लिये सी आइ टी यू को अपनी सांगठनिक शक्ति अपर्याप्त होने का बोध हुआ। इसके तत्काल पश्चात शायद संगठन सी आइ टी यू की स्थापना के 22 वर्षों में पहली बार सांगठनिक स्थिति तथा सी आइ टी यू की कार्य प्रणाली की व्यापक समीक्षा की गई।

सांगठनिक समीक्षा

6- समीक्षा करते समय रेखांकित किया गया कि पूंजी के बढ़ रहे हमलों के विरुद्ध सामान्य संघर्ष में श्रमिक संघों को एकजुट करने तथा तीव्र गति के साथ इन संघर्षों को नेतृत्व देने पर भी सी आइ टी यू का संगठन सदस्य संख्या में प्रारंभिक वृद्धि होने के पश्चात निश्चल हो गया है अथवा पठार जैसी स्थिति में पहुंच गया है। इसके और विकसित होने के मार्ग में अनेक दुर्बलताएं आड़े आती हैं और इन दुर्बलताओं का एक प्रमुख कारण जनवादी कार्य पद्धति के सिद्धांतों का पालन नहीं करना है, इसके विपरीत संगठन का विकास अवरुद्ध हो गया है। सी आइ टी यू ने समीक्षा की प्रक्रिया पूर्ण होने के पश्चात जून 1993 में संगठनात्मक रिपोर्ट पारित की। उस रिपोर्ट में जनवादी कार्य पद्धति के नियमों का पालन न करने तथा संगठन में आए भटकावों को स्पष्ट किया गया। इन भटकावों को दूर करने के लिये सुधारात्मक उपायों के रूप में... कार्य निश्चित किये गये एवं सी आइ टी यू के आठवें महाधिवेशन द्वारा परित आयोग के दस्तावेज में एक बार पुनः जनवादी कामकाजी पद्धति पर बल दिया गया।

7- यद्यपि कुछ स्थानों पर और कुछ पक्षों से स्थिति में कुछ सुधार दिखाई देता है किन्तु आवश्यक परिवर्तन की तुलना में जो परिवर्तन अथवा सुधार आया है वह भी अपेक्षा से कहीं कम है। क्या हम इस स्थिति को जारी रख सकते हैं ? यदि हम ऐसा कर सकते हैं तो हम अधिक समय तक प्रभावशाली ढंग से उस ऐतिहासिक भूमिका का निर्वहन नहीं कर सकेंगे जिसे हम पिछले तीन वर्षों से निभाते चले आ रहे हैं। इसका श्रेय श्रमिक आंदोलन को एकजुट रखने वाली हमारी ट्रेड यूनियन नीति को जाता है। हमें इस प्रमुख दुर्बलता को दूर करने के लिये गंभीरतापूर्वक अपने प्रयास जारी रखने चाहिए और इस संबंध में यदि हम विफल रहते हैं तो उसका क्या प्रभाव होगा, हमें उसका बार-बार स्मरण करना होगा।

८- जब हम ट्रेड यूनियन जनवाद अथवा कार्य पद्धति की बात करते हैं तो हमें ये दो भिन्न-भिन्न बातें प्रतीत होती हैं, किन्तु वास्तव में इन दोनों का गहरा अंत: संबंध है। ट्रेड यूनियन जनवाद का पहला पक्ष यूनियन के निचले स्तर के कार्यकर्ताओं के प्रति नेतृत्व के रुख तथा एक ओर यूनियन कार्यकर्ताओं के साथ और दूसरी ओर सामान्य श्रमिकों के साथ नेताओं के संबंधों के साथ रिश्तों रखता है। दूसरे पक्ष का संबंध समितियों के कामकाजी नियमों, समिति के सदस्यों के मध्य कामकाजी संबधों इत्यादि के साथ है। जनवादी कार्यपद्धति के इन दोनों पक्षों की दृष्टि से हमारे भीतर गंभीर दुर्बलताएं पाई जाती हैं।

यूनियनें तथा साधारण श्रमिक

९- ट्रेड यूनियन जनवाद के पहले पक्ष की कामरेड बी टी रणदिवे ने सी आइ टी यू के स्थापना सम्मेलन में समापन भाषण देते समय विस्तृत विवेचना की थी। उन्होंने कहा था- "अधिकांश यूनियनों में- एक साधारण श्रमिक की स्थिति अतिथि जैसी ही होती है, उसकी स्थिति उस व्यक्ति जैसी नहीं होती जिसका यह (यूनियन) किला होता है, जिसका यह अपना घर होता है।" उन्होंने आगे कहा था- "एक रुझान पाया जाता है कि यूनियन को श्रमिक एवं श्रमजीवी जनता का एक विशाल संगठन बनाने की अपेक्षा कुछेक नेताओं के लिये ही आरक्षित रखा जाए ", और वह जागरुकता जो हमने उनमें उत्पन्न की है, ऐसी है कि स्वयं श्रमिक इस स्थिति को स्वीकार कर लेते हैं, वे समझने लगते हैं कि यूनियन का काम करना केवल नेताओं का ही कारोबार है। उन्होंने कहा था, "... हमारा संघर्ष श्रमिक वर्ग की एकता का संघर्ष है, यह संघर्ष आंदोलन का संघर्ष है। सभी श्रमिकों के साथ एकता स्थापित की जानी चाहिए... ट्रेड यूनियन एकता... प्रतिरोध की एकता का तात्पर्य प्रत्येक श्रमिक चाहे वह किसी संगठन के साथ संबंधित हो या न हो, सर्वमान्य वर्ग संघर्ष में सम्मिलित किया जाना ही चाहिए।" इसे सुनिश्चित बनाने के लिए हमारे श्रमिक संघों को अपने झंडे तले एकत्रित होने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिये वास्तव में जीवंत संस्था बनना होगा और प्रत्येक श्रमिक को सोचना होगा कि यह उसका अपना किला है, यह नेताओं का किला अथवा उनका आवास नहीं है किन्तु एक सामान्य श्रमिक का घर है।" हम यूनियन में जनवादी कार्य पद्धति लागू करने की मांग करते हैं... क्योंकि हम श्रमिकों को सामान्य संघर्ष में खींच लाना चाहते हैं। वह केवल उसे मूक दर्शक बनकर देखता न रहे अपितु एक सक्रिय सहभागी के रूप में, सक्रिय नेताओं के रूप में उसमें भाग ले... जब तक हम श्रमिक वर्ग में काम करते समय जनवादी कार्य पद्धति को नहीं अपनाएंगे तब तक हम श्रमिकों को एकजुट करने में सफल नहीं होगें... हम में से प्रत्येक साथी को स्वयं अपनी जागरुकता में परिवर्तन लाना होगा, हमें पुरानी जागरुकता तथा पुरानी कार्यपद्धति का परित्याग करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ होना होगा...।"

10-बाईस वर्ष के पश्चात संगठनात्मक रिपोर्ट में उसी दुर्बलता को रेखांकित किया गया है जैसा कि कामरेड बी टी रणदिवे ने अपने समापन भाषण में उल्लेख किया था, "हमारी यूनियनों में साधारण श्रमिकों की सहभागिता केवल निष्क्रिय होती है। श्रमिकों को सक्रिय भागीदारी में लाने के लिए आवश्यक स्थितियां होनी चाहिए।"

11- अनेक श्रमिक संघों तथा सी आइ टी यू समितियों के सम्मेलन नियमित रूप से नहीं होते जबकि इनमें प्रमुख नीतिगत निर्णय लिये जाते हैं। ऐसे उदाहरण भी देखने-सुनने को मिल जाते हैं जहां 8-10 वर्षो से सम्मेलनों का आयोजन नहीं किया गया। जहां प्रतिनिधियों की प्रणाली काम करती है वहां पर भी प्रतिनिधियों का चयन जनवादी पद्धति से नहीं किया जाता-सी आइ टी यू के अखिल भारतीय महाधिवेशन का मामला भी कुछ ऐसा ही है। सम्मेलनों का अधिकांश समय नेतागण रिपोर्ट प्रस्तुत करते तथा भाषण देने में ही चट कर जाते हैं जबकि साधारण सदस्यों तथा प्रतिनिधियों के बोलने के लिये बहुत कम समय शेष रह जाता है। सम्मेलन में कार्यकारी समिति का समुचित चुनाव जनवादी कार्य पद्धति का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। क्योंकि सम्मेलन ही नियमित रूप से नहीं होते इसलिये उनके चुनाव भी नियमित नहीं होते। साधारण सदस्यों को मुक्त रूप से अपने नेताओं का चुनाव करने के लिये बहुत कम अवसर मिलता है। वे अपने प्रत्याशियों तक के नाम प्रस्तुत नहीं कर पाते। सीटू समितियों तथा श्रमिक संघों के नेतृत्व का निर्णय करने के मामले में बाहरी कारकों की भूमिका अधिक होती है। जनरल बाडी बैठकों की स्थिति भी लगभग ऐसी ही है: अनेक श्रमिक संघ तथा समितियां जनरल बाडी बैठकों का आयोजन नहीं करतीं और जहां कहीं उनका आयोजन किया भी जाता है वहां संपूर्ण सदस्य संख्या की सहभागिता सुनिश्चित बनाने के लिये बहुत कम प्रयास किया जाता है। सम्मेलनों की भांति जनरल बाडी बैठकों में भी नेता लोग अपनी बात कहने में ही अधिकांश समय व्यतीत कर देते हैं। अनेक मामलों में तो जनरल बाडी बैठकों में केवल नेतागण के भाषण ही सदस्यों को सुनने को मिलते हैं। सी आइ टी यू के निदेशक समझौतों के प्रारूप पर भी अंतिम रूप से हस्ताक्षर करने से पूर्व सदस्यों की स्वीकृति प्राप्त नहीं की जाती। निचले स्तर के कार्यकर्ताओं की आलोचनाओं की उपेक्षा कर दी जाती है। लेखा-खाते भी ठीक ढंग से रखे नहीं जाते और न ही उन्हें सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। इसके अतिरिक्त श्रमिक संघ शायद ही कभी श्रमिकों की विशाल संख्या की सामाजिक सांस्कृतिक समस्याओं और अन्य प्रश्नों पर अपनी चिन्ता का प्रदर्शन करते हैं।

12- लगभग चार वर्ष पूर्व पारित संगठनात्मक रिपोर्ट में इन सभी तथा अन्य दुर्बलताओं पर सविस्तार चर्चा की गई थी और जनरल कौंसिल तथा वर्किंग कमेटी की सभी बैठकों में सभी श्रमिक संघों को बार-बार इसका स्मरण कराया गया, इस

पर भी स्थिति में बहुत कम परिवर्तन आया है। सदस्य संख्या में कुछ वृद्धि अवश्य हुई है। किन्तु हम यह दावा कदापि नहीं कर सकते कि काम करने की हमारी पुरानी पद्धतियों में कुछ सीमा तक कोई परिवर्तन हुआ है। यूनियन तथा साधारण सदस्यों के मध्य दूरी पूर्वत: बनी हुई है।

13- यह दूरी अब विचलित कर देने वाला कारक बन रही है। हाल ही में हमने देखा है कि बहुत दिनों से मान्यता प्राप्त यूनियन का दर्जा हासिल होने पर भी हमारी यूनियन को गुप्त मतदान में पराजय का मुंह देखना पड़ा है। इसके अतिरिक्त स्थानीय तथा विदेशी धन प्राप्त एजेंसियां इस स्थिति से लाभ उठाकर श्रमिकों में केन्द्रीय श्रमिक संगठनों के प्रति उदासीनता का भाव उत्पन्न कर रही हैं, तथाकथित स्वतंत्र ट्रेड यूनियनवाद को प्रोत्साहन दे रही हैं और देश के श्रमिक आंदोलन में विभाजन के बीज बो रही हैं।

14- अत: यह स्पष्ट हो जाता है कि जनवादी कार्यपद्धति की वर्तमान विसंगतियों को और देरी किये बिना समाप्त किया जाना चाहिए। किन्तु धनात्मक रूप से श्रमिक संघों के साधारण सदस्यों की सक्रिय सहभागिता को प्राप्त करना न केवल आंदोलनों एवं हड़तालों के समय अनिवार्य हो जाता है अपितु हमारे द्वारा किये जाने वाले दैनंदिन कार्यों में भी उनकी सहभागिता अनिवार्य हो जाती है। हमें और विलंब किये बिना कार्य पद्धति को ऐसा बनाना होगा कि श्रमिक संघों में श्रमिकों की रुचि बनी रहे। **प्रथम,** श्रमिक संघों को श्रमिकों की आजीविका, तथा जीवन जिसमें सामाजिक तथा सांस्कृतिक पक्ष भी सम्मिलित हैं, से संबंधित प्रश्नों की ओर ध्यान देना चाहिए। **दूसरे,** सभी मामलों में श्रमिकों के विचार अवश्य पूछे जाएं, वे अपने विचारों की मुक्त अभिव्यक्ति कर सकें, इसे सुनिश्चित बनाया जाए। उसके द्वारा व्यक्त किए गए विचारों को महत्व दिया जाना चाहिए और निर्णय लेते समय उसे ध्यान में रखा जाए। श्रमिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में इतने संलिप्त होने चाहिए कि उनके भीतर यह भावना हो कि लिये गए सभी निर्णय उनके अपने निर्णय हैं। **तीसरे,** साधारण सदस्यों तथा कार्यकर्ताओं को निरंतर निर्णयों को कार्यरूप देने तथा अन्य घटनाओं की सूचना देते रहना चाहिए। **चौथे,** यह सुनिश्चित बनाया जाए कि सभी स्तरों पर नेतृत्व का चुनाव स्वयं श्रमिकों द्वारा समुचित रूचि लेकर मुक्त रूप से किया जाए।

15- इससे भी आगे बढ़ते हुए हमें स्मरण रखना चाहिए कि हमारे प्रयास केवल अपने श्रमिक संघ के सदस्यों के लिये ही सीमित नहीं रहें अपितु साधारण श्रमिक तक भी इसका विस्तार किया जाना चाहिए। हमें अधिकाधिक गैर सदस्य श्रमिकों को यूनियन की गतिविधियों में खींच लाना चाहिए। इससे हम वर्ग संघर्ष के लिये प्रतिबद्ध श्रमिक संघ के मूलभूत उद्देश्य को प्राप्त कर सकेंगे। हमारे श्रमिक संघों के लिये अवश्यंभावी हो जाता है कि वे अपनी सदस्यता की संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठकर संपूर्ण श्रमिक वर्ग की बात करें।

समितियों के काम

16- जनवादी कार्य पद्धति का एक और पक्ष श्रमिक संघों के विभिन्न अंगों, समितियों, परिषदों, सचिवमंडलों इत्यादि के कामों के साथ संबंध रखता है और इसी के भाग के रूप में यह पक्ष कार्यकर्ताओं के कार्यों तथा इस प्रक्रिया में अनेक आंतरिक संबंधों के साथ भी संबंधित है। ये समितियां, परिषदें तथा सचिवमंडल मिल कर एक संगठन के नेतृत्व के अवयव का गठन करते हैं। प्रत्येक अवयव (आर्गन) का एक विशेष कार्य होता है। उसकी कार्यपद्धति की प्रकृति का निर्धारण बहुधा नेतृत्व के दृष्टिकोण तथा रुख पर निर्भर करता है। यह समझना कठिन नहीं है। यदि नेतृत्व का रुख जनवादी नहीं है तो विभिन्न चरणों (टायर्स) का नेतृत्व जनवादी ढंग से काम नहीं कर सकेगा। कोई भी व्यक्ति इसके बिना श्रमिक संघ के मामलों में साधारण सदस्य तथा श्रमिकों की सक्रिय सहभागिता की कल्पना भी नहीं कर सकता। इस संदर्भ में भी संगठनात्मक रिपोर्ट में गंभीर दुर्बलताओं को रेखांकित किया गया है।

17- रिपोर्ट में सम्मेलनों, चुनावों तथा जी बी बैठकों के संबंध में रेखांकित किया गया था, ठीक उसी प्रकार अनेक मामलों में सी आइ टी यू की समितियां तथा परिषदें नियमित रूप से अपनी बैठकों का आयोजन नहीं करतीं। जब ये बैठकें होती भी हैं तो उनकी समुचित ढंग से तैयारी नहीं की जाती। इसके दुष्परिणाम स्वरूप समितियों/परिषदों के सदस्य अपना प्रभावी योगदान दे नहीं पाते। प्रायः नेतागण अधिकतर अपनी बात कहते रहते हैं और वे सदस्यों को बोलने का अवसर ही नहीं देते। यहां तक कि श्रमिक संघ में सक्रिय परिषदों तथा समिति के सदस्यों को भी यह अवसर प्राप्त नहीं होता जिससे वे अनुभव कर सकें कि संगठन की नीति का निर्धारण करने के मामलों में उनकी भी कोई भूमिका है। वे अनिवार्य रूप से निष्क्रिय हो जाते हैं। श्रमिक संघों के सारे कार्य का दायित्व कुछ पदाधिकारियों के कंधों पर ही आ जाता है।

18- यहां तक कि पदाधिकारी भी परस्पर नियमित रूप से विचार विमर्श नहीं करते, उनकी नियमित अंतराल में बैठकें नहीं होतीं और न ही सचिवमंडल की बैठकें की जाती हैं, उनके मध्य परस्पर सूचनाओं के आदान-प्रदान की कोई व्यवस्था नहीं है। अन्ततोगत्वा यूनियन अथवा समिति के सभी मामलों का नियंत्रण प्रायः अध्यक्षों और सचिवों अथवा उनमें से भी किसी एक के हाथ में केन्द्रित होकर रह जाता है। इससे नौकरशाही की संवृत्ति के पनपने की संभावनाओं को बढ़ जाना स्वाभाविक ही है। इस अत्यंत घातक रुझान का घुन संगठन की जीवन क्षमता को ही चट कर जाता है।

19- पदाधिकारियों अथवा सचिवमंडल, जो नेतृत्वकारी निकाय होते हैं, में जनवादी कार्यपद्धति का अर्थ है सामूहिक कार्य पद्धति। नेतृत्व की सामूहिक कार्य

पद्धति के लिये निरंतर सूचनाओं का आदान-प्रदान करने, निरंतर सामूहिक विचार विमर्श करने, विचार विनिमय करने, की आवश्यकता है। इसमें विचार तथा समझदारी की विशाल एकता बनती है तथा कामों इत्यादि का समुचित विभाजन हो पाता है। सामूहिक कार्य पद्धति समूह की पद्धति है। अध्यक्ष तथा सचिव को दल के नेता के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करना होता है। समूह के नेता के रूप में उन्हें सुनिश्चित बनाना चाहिए कि समूह के प्रत्येक सदस्य को उसकी योग्यता तथा झुकाव के अनुसार अच्छे से अच्छा काम करने का अवसर प्रदान किया जाए और यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह किस प्रकार अपना काम करता है। जहां तक संभव हो सके संगठन के हित में सभी सदस्यों के योगदानों को केन्द्रित करे। उसे अत्यंत चौकसी से काम लेना होगा। उसे इस बात का ध्यान रखना होगा कि वह सचेत अथवा अचेत दोनों प्रकार की अवस्थाओं में कहीं किसी एक गुट विशेष का नेता ही न बन जाए। दल का नेता "समान स्तर के लोगों में प्रथम" होगा और सभी साथियों के साथ समान व्यवहार करेगा। स्वस्थ्य सामूहिक कार्य पद्धति के ये कुछ विशेष लक्षण होते हैं। निजी कार्य पद्धति सामूहिक कार्यपद्धति के विपरीत होती है। जिसका अर्थ है कोई पदाधिकारी काम के कुछ पक्षों के संबंध में, व्यक्तिगत रूप से अपना निर्णय ले लेता है और व्यक्तिगत रूप से ही उन्हें कार्यान्वित करने लग जाता है जबकि उन पक्षों जिनके साथ उसका संबंध होता है और संगठन के अन्य पदाधिकारियों को अंधकार में रखा जाता है। पराकाष्ठा तो उस समय होती है जब कोई पदाधिकारी अपने लिये एक विशेष मन वांछित कार्य चुन लेता है और सावधानी पूर्वक अन्य पदाधिकारियों को वह काम करने नहीं देता। जहां अध्यक्षों तथा सचिवों को व्यक्तिगत रूप से काम करने के विशेष अवसर प्राप्त होते हैं, वहीं उन पदाधिकारियों के मामले में ऐसा नहीं होता। स्पष्ट है कि इस प्रकार की कामकाजी पद्धति से संगठन को क्षति पहुंचती है। इससे कार्यकर्ता व्यक्तिगत प्रभाव का उपयोग करके काम करने का मार्ग चुन लेते हैं। इससे व्यक्ति ऊंचा उठता है, संगठन नहीं।

20- सामूहिक कार्य पद्धति में एक और विसंगति गुटबाजी के कारण जन्म लेती है। कार्यकर्ता कभी-कभार अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं के चलते एकजुट हो जाते हैं और उन्हें पूर्ण करने के लिये काम करने लगते हैं। प्रायः भोले भाले साथी भी इसी गुटबाजी में धकेल दिये जाते हैं। यह भी स्पष्ट है कि गुटबाजी व्यक्तिगत कार्यपद्धति से भी अधिक संगठन का अहित करती है।

21- किसी भी संगठन की जनवादी कार्यपद्धति पूर्ण रूप से इस बात पर निर्भर करती है कि नेतृत्वकारी दल कितने प्रभावशाली ढंग से काम करता है। सामूहिक नेतृत्व अत्यंत दुर्लभ होता चला जा रहा है। इसके अभाव में संगठन में जनवादी कार्यपद्धति का विकास का मार्ग विशाल स्तर पर अवरुद्ध हो जाता है।

22- द्वितीय पक्ष में साथ संबंधित भटकावों के उद्धरणों की सूची हम अपने

दस्तावेजों में दे चुके हैं। उन्हें दोहराने की आवश्यकता नहीं है। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि हम उन कारणों पर विचार करें कि संगठनात्मक रिपोर्ट पारित होने के चार वर्ष पश्चात भी उसे व्यवहार में क्यों नहीं लाया जा सका।

प्रतिकूल विचारधारा का प्रभाव

23- सभी प्रकार के भटकाव एवं विपथगमन मूल रूप से प्रतिकूल वर्गीय विचारधारा के प्रभाव में निहित है, यह प्रतिकूल विचारधारा शोषक वर्ग, सामंत तथा पूंजीपति वर्गों की विचारधारा ही हो सकती है। हमारे देश में आधुनिक उद्योग की मंद प्रगति हुई है और सामंती एवं अर्ध-सामंती संबंध निरंतर बने रहे हैं, सामंतवादी विचारधारा का प्रभाव अत्यंत व्यापक है। पूंजीवादी व्यक्तिवाद के साथ-साथ सत्ता की सामंती प्रवृत्ति ने हमारी मानसिकता का निर्माण किया है और ऊपर से सुधारवादी रुझानों ने हमारा पोषण किया है।

24- यूनियन में साधारण सदस्य तथा सामान्य श्रमिकों की उपेक्षा करने की भावना हमारे अंदर सुधारवादी प्रभावों के चलते गहराई तक समाई हुई है। हमारे यूनियन के नेताओं में विकासशील प्रक्रिया के रूप में वर्ग संघर्ष की अवधारणा और उसके साथ-साथ संपूर्ण श्रमिक वर्ग की जागरुक सक्रिय सहभागिता जैसी भावनाओं (अथवा मानसिकता) का नितांत अभाव सा है, अधिकांश मामलों में तो ऐसी भावना पाई ही नहीं जाती। इसलिये हम श्रमजीवी जनता के प्रति इस प्रकार का रुख अपनाते हैं जो सुधारवादी नेताओं के रुख से अलग नहीं होता। एक अत्यंत घिनौनी बात जिसकी ओर कामरेड बी टी रणदिवे ने हमारा ध्यान आकृष्ट किया था, वह यह है कि श्रमिक गण भी किसी नेता द्वारा अलोकतांत्रिक ढंग से काम करने पर अपना विरोध व्यक्त नहीं करते। वे इसे सामान्य सी बात मानते हैं कि यूनियन का काम करना नेताओं का ही दायित्व है। इससे हमें उस खाई की गहराई का अनुमान हो जाता है जिसकी सुधारवादी चेतना की दलदल में हम धंसते ही चले जा रहे हैं।

25- हमारे अधिकांश नेताओं का मूल रूप से श्रमिक वर्ग के साथ कोई संबंध नहीं है, उनमें से अधिकांश स्वयं कभी न श्रमिक थे और न हैं। वे नेता भी जो श्रमिक हैं, अधिकांशतया पहली पीढ़ी के श्रमिक हैं जो विरोधी वर्गों की विचारधारा का पूर्णतया परित्याग किये बिना ही श्रमिक वर्ग की पंक्तियों में सम्मिलित हो गए थे। कुछेक नेताओं का कुछ न कुछ सैद्धांतिक आधार है और कुछेक के पास ऊंची डिग्री है और वे एक वर्ग के रूप में श्रमिकों की ऐतिहासिक भूमिका से जागरुक हैं, संपूर्ण वर्ग को एकजुट करने में उनके काम का महत्व तो है किन्तु उनका ज्ञान उनके अंतरतम की गहराइयों तक नहीं जाता जिससे उनमें मूलभूत परिवर्तन आ सके।

26- हम अपनी बात को एक बार पुनः दोहराएंगे, हमारे यहां ऐसे साथी भी हैं जो सामूहिक कार्यपद्धति पर लंबा चौड़ा भाषण दे सकते हैं किन्तु उनकी मानसिकता वैसी नहीं होती और उनके लिये अपनी व्यक्तिगत भूमिका ही सर्वोच्च महत्व रखती

है। व्यक्तिवाद की इसी विचारधारा के कारण ही वे न केवल साधारण श्रमिकों की उपेक्षा करते हैं अपितु समितियों में अपने सहयोगी सदस्यों, सचिवमंडल में अपने सहयोगियों का भी दृष्टिलोप कर देते हैं, समिति तथा परिषदों की नियमित बैठकों में भी वे लापरवाही से काम लेते हैं। और यह बात केवल प्रमुख नेताओं पर ही लागू नहीं होती, अन्य लोगों का प्रत्युत्तर भी प्रायः उसी विचारधारा से निर्धारित होता है और वह वैसा ही हो सकता है।

हमारे कार्य

27–यदि यह मूल कारण है तो इसका निदान हमारी चेतना को बदलने से ही संभव हो सकता है। यह, निश्चित रूप से कुछ दिनों अथवा महीनों में पूर्ण कर लिया जाने वाला कार्य नहीं है। विचारधारात्मक परिष्कार तथा आत्म परिष्कार प्रतिकूल विचारधारा के उन्मूलन और जागरुकता एवं मानसिकता में पूर्ण परिवर्तन के लिये अत्यावश्यक है। शिक्षा श्रमिक संघों की नियमित गतिविधियों का एक नियमित भाग होनी चाहिए किन्तु प्रतिदिन की शिक्षा से इस काम में अधिक सहायता नहीं मिलती। हमें इस उद्देश्य के लिये विशेष रूप से बनाई गई शैक्षणिक पद्धति पर विचार करना चाहिए। समितियों में ईमानदारी से आलोचना करना तथा आत्म आलोचना अत्यंत लाभदायक होती है। यह एक कठिन कार्य है।

28– कुछ नियमों का यंत्रवत पालन करने से ही ट्रेड यूनियन जनवाद नहीं आ जाता और न ही वह इस प्रकार के नियमों पर आधारित होता है। जागरुकता का परिष्कार किये बिना यह जनवाद आ ही नहीं सकता। तथापि ये नियम जनवादी कार्यपद्धति के सिद्धांतों पर आधारित होते हैं, इसलिये इनका अत्यधिक महत्व है। गलत विचारों की ठोस अभिव्यक्ति हमारे संगठनात्मक कार्यों के माध्यम से होती है। गलत विचारों के शुद्धिकरण का कार्य संगठनात्मक रूप किया जाना चाहिए। हमारे दस्तावेजों में इन भटकावों की ओर संकेत करते हुए, ठोस रूप से वे नियम बनाए गए हैं जिनका पालन किया जाना चाहिए। प्रत्येक नियम का गंभीरतापूर्वक पालन किया जाए, इसके लिये हर संभव प्रयास किये जाने की आवश्यकता है। उच्च स्तरीय समितियों पर इसे सुनिश्चित बनाने का अधिक दायित्व आता है।

29– किन्तु उच्चतर समितियों को सर्वप्रथम स्वयं अपना सुधार करना होगा और उसके पश्चात वही कार्य करने के लिये उन्हें अधीनस्थ समितियों की सहायता करनी होगी। इस संबंध में सभी स्तरों पर जिसमें केन्द्र भी सम्मिलित हैं, हमारी विफलता एक समान है। केन्द्र स्वयं प्रतिकूल वर्गीय विचारधारा के प्रभाव को निकाल बाहर करने के लिये शिक्षा की प्रभावी व्यवस्था लागू करने में विफल रहा है। इसके अतिरिक्त उसकी विफलता स्वयं अपने कामों में वांछित स्तर तक सामूहिकता की भावना विकसित करने के मामले में भी है। वह जनवादी कार्यपद्धति को सुनिश्चित बनाने के लिये सांगठनिक रिपोर्ट को लागू करने के लिये निरीक्षण को

प्रभावी प्रबंध करने में भी अब तक विफल रहा है। केन्द्र के दृढ़ एवं जोरदार हस्तक्षेप के बिना जनवादी नियमों में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने की अपेक्षा करना सिद्धांत तथा व्यवहार दोनों दृष्टियों से गलत है, यह बात स्पष्ट हो जानी चाहिए।

30- तथापि इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि वर्ग संघर्ष के तीव्र होने से स्वयंमेव ऐसा वातावरण बन जाएगा जो विसंगतियों एवं दुर्बलताओं को दूर करने के मामले में अत्यंत अनुकूल होगा।

31- जनवादी कार्य पद्धति का वर्तमान उपयोग नया नहीं है। यह अपने संगठन को कारगर बनाने के लिये हमारा निरंतर प्रयास ही हैं। यह कार्य संगठनात्मक रिपोर्ट पारित होने के समय से ही शुरू हो गया था। वास्तव में हमारी अधिकांश सांगठनिक दुर्बलताओं एवं कमियों जिनका वर्णन रिपोर्ट में किया गया है, जनवादी कार्यपद्धति के अभाव में ही उत्पन्न हुई है। यह एक गंभीर कमी है। इसके लिये सभी स्तरों का नेतृत्व ही उत्तरदायी है। रिपोर्ट में निर्दिष्ट सामूहिक कदमों को शायद ही लागू किया गया हो। उन्हें लागू करने के लिये हमें दृढ़ प्रतिज्ञ होकर नये सिरे से निरंतर प्रयास करने होंगे।

32- यद्यपि संगठनात्मक रिपोर्ट में पर्याप्त विस्तार के साथ सुधारात्मक कदमों का वर्णन किया गया है। अनेक बिंदु जो यहां उद्धत किये गये हैं, को लागू करने की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

- संविधान में संशोधन किये जाने की आवश्यकता है। उसमें जनवादी कार्यपद्धति से संबंधित अनेक प्रावधान जोड़े जाने चाहिए।

- केन्द्र की जनवादी कार्यपद्धति की ओर विशेष ध्यान देते हुए संगठनात्मक रिपोर्ट के कार्यान्वयन के लिये विशेष अभियान चलाना होगा और उसे चरणबद्ध ढंग से कार्यरूप देने के लिये कार्यक्रम बनाना होगा। इसकी प्रगति पर दृष्टि रखने के लिये पक्के प्रबंध करने होंगे।

-जनरल बाडी बैठकें नियमित रूप से आयोजित की जाएं और उनमें साधारण सदस्यों तथा गैर सदस्यों की अधिक से अधिक उपस्थिति सुनिश्चित बनाई जाए। बैठक में भाग लेने वाले सदस्यों को अपने विचार व्यक्त करने के लिये पूरा अवसर दिया जाए।

- गुप्त मतदान द्वारा यूनियन के चुनाव कराने के संविधानिक प्रावधानों की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। सांगठनिक दस्तावेजों में संचयी मतदान और अन्य प्रावधान किये गए हैं। चुनाव प्रक्रिया बाहरी तत्वों के दबाव से पूर्णतया मुक्त हो, इसका विशेष रूप से ध्यान रखा जाना चाहिए।

-केन्द्र द्वारा कार्यकर्ताओं की शिक्षा तथा प्रशिक्षण के लिये विशेष कार्यक्रम बनाया जाना चाहिए ताकि कार्यकर्ताओं पर प्रतिकूल विचारधारा का प्रभाव नहीं पड़े और उनका विकास किया जा सके।

– एक नेता द्वारा अनेकानेक श्रमिक संघों के दायित्व का बोझ अपने कंधों पर उठाने की परिपाटी तत्काल समाप्त की जाए।

33– तथापि, हमें स्मरण रखना होगा कि कोई भी संवैधानिक प्रावधान तथा नियम अपने में महत्वपूर्ण नहीं होता, यद्यपि वह महत्वपूर्ण तो होता है, किन्तु वह उस समय तक जनवादी कार्यपद्धति को सुनिश्चित नहीं बना सकता जब तक हमारे अपने भीतर जनवादी भावना का विकास नहीं होता। यही भावना हमारे अंतिम लक्ष्य को प्रतिबिंबित कर सकती है। नेताओं तथा कार्यकर्ताओं के लिये आवश्यक है कि वे प्रत्येक स्थिति में संगठन के हितों को प्राथमिकता दें और अपने हितों को गौण रखें। जनवादी कार्यपद्धति की यही मूल पूर्व शर्त है।

34– हमें सावधानी से काम लेना होगा। यद्यपि हमारे पिछले दस्तावेजों में हमारी संगठनात्मक कमियों, दुर्बलताओं तथा असफलताओं को अनावृत करने में सख्ती से काम लिया गया है, वर्तमान दस्तावेज में भी ऐसा ही किया गया है तथापि हम एक क्षण के लिये भी इस तथ्य को भुला नहीं सकते कि ये सब दुर्बलताएं होने पर भी, सी आइ टी यू के जन्म से ही हमने अपने देश में श्रमिक आंदोलन में ऐतिहासिक महत्व की भूमिका निभाई है और अब तक हम ऐसी भूमिका निभा रहे हैं। सी आइ टी यू भिन्न–भिन्न विचारधाराएं रखने वाले अधिकांश श्रमिक संगठनों को शोषक वर्गों के हमलों के प्रतिकार हेतु साझे संघर्षों में खींच लाने में सफल रहा है। किन्तु क्या अब कुछ और करना शेष नहीं रहा। हमें अभी बहुत कुछ करना है। हमारा संगठन ही हमारा शस्त्र है। हम अपने इस शस्त्र की दुर्बलताओं के विषय में जागरुक हो गए हैं, यह एक अच्छी बात है और हमने पहले ही अपनी दुर्बलताओं का पता लगाने के लिये लंबे समय तक कठोर कार्य किया है और हमने इन पर काबू पाने के ढंगों एवं साधनों का पता लगाया है। यदि हम सदा अपने उन कर्तव्यों का स्मरण करते रहें जिनका दायित्व इतिहास ने हमारे कंधों पर डाला है, यदि श्रमिकों की विशाल संख्या के साथ अपने संबंधों में दूरी न आने दें और निरंतर अपनी कमियों एवं दुर्बलताओं को दूर करने के लिये प्रयास करते रहें तो हम निश्चित रूप से अपने ऐतिहासिक दायित्वों को पूर्ण करने में सक्षम हो सकेंगे।

●

बी टी रणदिवे

19 दिसंबर 1904 - 6अप्रैल 1990

सी आई टी यू के संस्थापक अध्यक्ष भालचंद्र त्र्यंबक रणदिवे, जिन्हें उनके सहयोगी बी टी आर के नाम से जानते थे, सिर्फ देश के ट्रेड यूनियन आंदोलन के सबसे बड़े व सर्वाधिक स्पष्ट समझदारी वाले नेता ही नहीं थे- सामाजिक परिवर्तन के लिये जारी क्रांतिकारी आंदोलन के भी शीर्ष नेता थे।

"वे एक ओर ट्रेड यूनियन आंदोलन के शुरूआती दौर व ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध राष्ट्रीय स्वातंत्र्य आंदोलन तथा दूसरी ओर समाजवादी राज्य की स्थापना हेतु पूंजीवाद व साम्राज्यवाद के विरुद्ध मजदूर वर्ग के मौजूदा वर्ग संघर्ष की एतिहासिक कड़ी थे। वे एक महान चिंतक, बुद्धिजीवी, लेखक, वक्ता, मैदानी योद्धा एवं मार्क्सवाद लेनिनवाद के सिद्धांतों के प्रति समर्पित अतुलनीय नेता थे..."

(दि वर्किंग क्लास: 1990)

"जो नौजवान साथी पिछली कुछ वर्षों में आंदोलन में शामिल हुए हैं, उन्हें क्रांतिकारी संघर्ष को जारी रखने के लिये बी टी आर के जीवन, काम और शिक्षाओं से प्रेरणा लेनी चाहिए।"

(ई एम एस नंबूदिरिपाद)

"बी टी आर ने, शोषण एवं अन्याय के विरुद्ध अथक एवं निरंतर आर्थिक संघर्षों की हिमायत की साथ ही मजदूर वर्ग के राजनीतिकरण की लड़ाई छेड़ी ताकि वह अर्थवाद के विरुद्ध खड़ा हो सके। उन्होंने किसान आंदोलनों की मदद करने तथा मजदूर किसान एकता का निर्माण करने के ट्रेड यूनियनों के कर्तव्य की बार-बार याद दिलाई। उन्होंने रोजगार शुदा मजदूरों से बेरोजगार मजदूरों के लिये संघर्ष करने तथा उनके साथ अपना साझा आंदोलन विकसित करने को भी कहा।"

(ज्योति बसु, 1990)

"वे सिर्फ भारत के ही सबसे बड़े मार्क्सवादी नहीं थे, मैं उन्हें उनकी पीढ़ी के विश्व के कुछ महान कम्युनिस्ट नेताओं में से एक मानता हूं।"

(एम. बासवपुन्नैया)